फैसल केरों जासूसी

डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी

फैसल केरों जासूसी

फैसल केरों जासूसी

उर्दू बाल-उपन्यास केरों अंगिका रूपान्तर

डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी

अंगिका अनुवाद

डॉ. अमरेन्द्र

प्रकाशक

एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस

३१०८, वकील स्ट्रीट, कूचा पंडित

लाल कुँआ, दिल्ली-११०००६

पुस्तक : फैसल केरॉ जासूसी
लेखक : डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी
अंगिका अनुवाद : डॉ. अमरेन्द्र
संरक्षक : मुजतबा खां
संस्करण : ई. २००६
मूल्य : ३० रुपये
मुद्रक : अफीफ ऑफसेट प्रिंटर्स, नयी दिल्ली-६

पुस्तक मिलने के पते

- एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, ३१०८, वकील स्ट्रीट, कूचा पंडित, लाल कुँआ, दिल्ली-११०००६
- कोहसार, भीखनपुर-३, भागलपुर-८१२००१ (बिहार)
- कामायनी, लाल खां दरगाह लेन, सराय, भागलपुर-८१२००१ (बिहार)

FAISAL KERO JASUSI By Dr. Manazir Ashiq Harganvi
ANGIKA TRANSLATION By Dr. Amrendra

अंगिका रों नामी साहित्यकार आरो
आरक्षी उपाधीक्षक
चन्द्रप्रकाश जगप्रिय
कें ई बाल उपन्यास समर्पित ।

—अमरेन्द्र

पहिलें एकरा पढ़ी ला

जिन्दगी बड्डी रंगारंग के होय छै, मतरकि जिन्दगी के आयकोॅ रंगारंग में खून, अगुवा, लूट-मार, हंगामा, परेशानी आरो नीयत रोॅ खराबिये ज्यादा शामिल होय गेलोॅ छै । आवै वाला दिनोॅ में कोय न कोय घटना, कोय न कोय दुर्घटना होतैं रहै छै, जेकरोॅ सामना हमरा सब जोगोॅ कें करै लें पड़ै छै ।

जबें ई रं हाल रहें; हमरा सिनी कें होशियार रहै के जरूरत छै । आपनोॅ हिफाजत वास्तें हर वक्ती चौकन्ना रहै के जरूरत छै आरो मुकाबला वास्ते कमर बाँधी कें तैयारो रहै के जरूरत छै । यही लें एकरोॅ जरूरत छै कि हम्में ऊ सब के बारे में, होय वाला घटना साथें आपनोॅ बचाव केरोॅ बारो में पूरा पूरा जानकारी लैके कोशिश करतें रहौं ।

जिन्न, भूत, परी आरो राजकुमार केरोॅ कहानी सिनी—जरूरे पढौं, मतरकि आय इक्कीसवीं सदी में, जबकि सब्भे दिश षडयंत्र केरोॅ बाजार गर्म छै, तबें हर लड़का कें राजकुमार आरो हर लड़की कें परी बनाना चाही, कैन्हें कि जिन, भूत, राक्षसनी तें हमरा सिनी के आसे-पासे घूमतें रहै छै । वै सिनी सें अपना आप कें, घर कें, मुहल्ला कें, गाँव, शहर आरो मुल्क कें बचाना छै, मजकि केना ? सिर्फ आपनोॅ आचरण सें ।

फैसल रोॅ चरित्र हमरोॅ कार्यवाही आचरण में मद्दगार बनें सकै छै । फैसल जासूस छेकै मतरकि तोरा सिनी के एकदम आपनोॅ, जेना तोहें खुद्दे फैसल रहोॅ आरो भेद कें जानै साथें मुकाबलौं वास्तें अपराधी के पीछा करतें रहोॅ । साथें-साथें जुल्म अत्याचार कें खिलाफ आवाज बुलन्द करी रहलोॅ रहोॅ । हमरा विश्वास छै कि फैसल केरोॅ जासूसी तोरा सिनी पसन्द करभौ आरो यै सें बहुते कुछ सिखवो करभौ । साथे-साथ, निडर, बहादुर आरो बुद्धिमानो बनभौ । आपनोॅ राय सें हमरोॅ परिचित करैभौ । धन्यवाद !

—मनाज़िर आशिक़ हरगानवी

कोहसार, भीखनपुर-३,
भागलपुर-८१२००१ (बिहार)
फोन : ०६४१, २४२३६३३

जासूसी उपन्यास आरो 'फैसल केरों जासूसी'

'फैसल केरों जासूसी' डॉ. मनाजिर आशिक हरगानवी द्वारा लिखलों बाल-जासूरी उपन्यास छेकै । भले ही अनुवाद रहें, अंगिका में ई पहिलों बाल जासूसी उपन्यास छेकै, जे अंगिका के भावी जासूसी उपन्यास-लेखन कें प्रेरित करतै, बल देतै । अंगिका में तें अभी बाल उपन्यास के लेखनो ठीक सें शुरू नै भेलों छै, तबें बाल जासूसी उपन्यास रों लेखन दूरे के बात छेकै । कैन्हें कि जासूसी कथा लिखवों ओत्तें आसानो नै होय छै ।

जासूसी कथा कें हिन्दी में ओत्तें साहित्यिक प्रतिष्ठा नै छै, जत्तें आरो किसिम के साहित्य कें । मजकि एकरा सें के इन्कार करतै कि तिलिस्म उपन्यास छोड़ी कें एक जासूसी उपन्यास में जत्तें औत्सुक्य के भाव रहै छै, ऊ कोय कथा साहित्य में नै आरो कि कथा साहित्य में जेकरों होना निहायत जरूरी छै । एकरों बिना तें उपन्यास कोय छूवो नै करतै—ऊ कत्तो ज्ञान के भण्डार कैन्हें नी रहौक ।

ई बात विद्वानों कें थोड़ों अकबकावें पारें, जो हम्में ई कहियै कि जासूसी उपन्यास लिखवों प्रचलित उपन्यास-लेखन सें ज्यादा श्रमसाध्य छै आरो टेढ़ों, ई यै लेली कि सामान्य उपन्यास में ढेर सिनी बात शुरू होय छै, आरो ढेर सिनी छुटी जाय छै, ओकरा सें नै तें उपन्यास पर कोय विशेष

फरक पड़ै छै, नै पाठक पर, मतरकि जासूसी उपन्यास में है सब नै होय छै । आरम्भ में जे कुछ बात जासूसी उपन्यासकारें उठावै छै, ओकरा अंत तांय लैयो जाय छै, आरो चूँकि ई किसिम के उपन्यास ज्यादातर हत्या हेनोॅ घटनाहै पर गढ़लोॅ जाय छै तेॅ यहाँ हेनोॅ नै होय छै कि सब रहस्य एकबारिये आखरिये में जाय केॅ खुलै छै । यहाँ घटना-विन्यास कुछ हेनोॅ होय छै कि उपन्यासकार घटना के रहस्यो पर सें कुछ-कुछ पर्दा बीचोॅ-बीचोॅ में उठैतें चलै लेॅ, ताकि कथारस हौले-होले घन्नोॅ होलोॅ जाय । आरो आखिर में उपन्यासकार केॅ सब पात्र आरो घटना केॅ समेटी केॅ घटना के रहस्य केॅ खोली केॅ राखी दै लेॅ पड़ै छै । जाहिर छै कि यै कामोॅ में उपन्यासकार केॅ आपनोॅ दिमाग केॅ एकदम सचेत बनैलेॅ राखै लेॅ पड़ै छै । एक जासूसी उपन्यास में घटना जरूर उलझलोॅ रहै छै, पर ऊ बड़ा तेजी सें रहस्योद्भेदन दिश बढ़भो करै छै, यही लेॅ प्रासंगिक कथा आरो बेमतलब के पात्र के यहाँ जरूरते नै रहै छै, जे उपन्यास के गति में बाधक बनेॅ ।

एक जासूसी उपन्यास के शिल्प-विधान केॅ समझै लेली डॉ. मजाजिर आशिक हरगानवी के बाल जासूसी उपन्यास 'फैसल केरोॅ जासूसी' पढ़ी लेवोॅ ही काफी होतै ।

ई संबंध में एक बात आरो हम्में कहे लेॅ चाहवै कि जे पाठक हेनोॅ उपन्यास में कोय महान सामाजिक उद्देश्य, मनोवैज्ञानिक सत्य आकि महान पात्र के तलाश करै लेॅ चाहै छै, हुनी जासूसी उपन्यास केॅ नै छूऔ । एक जासूसी उपन्यासकार महान पात्र केॅ गढ़ै लेली उपन्यास लिखवो नै करै छै । यै में मुख्य पात्र जासूस के एक्के काम होय छै कि वैं आपनोॅ बुद्धि सें अपराधी आरो अपराध के ढंग केॅ खोजी निकालेॅ, जे उपन्यास में कुछ हेनोॅ ढंग से छिपलोॅ रहे छै कि पाठक ओकरा जानै लेॅ एकदम बेचैन होय जाय । जे जासूसी उपन्यास में है गुण छै, वहेॅ सफल जासूसी उपन्यास ।

'फैसल केरोॅ जासूसी' के सफलता केरोॅ रहस्यो यहेॅ छेकै । 'फैसल केरोॅ जासूसी' पढ़लेॅ जा, यै में कोय हेनोॅ चीज नै मिलतौं, जे भूत-प्रेत के खेल लगेॅ । जे टा घटना घटै छै, केकरौ पर विश्वास नै करै के कोय सवाले नै छै। घटना के यहेॅ विश्वसनीयता जासूसी उपन्यास केॅ स्वाभाविक जीवन दै छै; जीवन आरो जगत सें ठीक-ठाक जोड़ै छै । कथा आलोचक वैलेन्टाइन विलियम्स ने भी जासूसी उपन्यास के एक प्रमुख विशेषता एकरोॅ घटना के

विश्वसनीयता कें ही मानलें छै ।

'फैसल केरों जासूसी' कें अंगिका में अनुवाद करे के योजना यहू लेली बनलै कि यहाँ हेनों कोय बात नै छै, जे समाज या बाल-स्वभाव कें विकृत करै के मंसा राखै । होन्हो कें एक सच्चा जासूसी उपन्यास केरों लक्ष्य ई होभो नै करै छै—कोय्यो जासूसी उपन्यास कें उठाय कें देखी लेलों जाय । वहू में डॉ. मनाजिर आशिक हरगानवी ने तें 'फैसल केरों जासूसी' के लेखकीय वक्तव्ये में साफ-साफ लिखी देनें छै कि ई बाल जासूसी उपन्यास रों लेखन के पीछू आयकों संघातिक परिवेश रों प्रति बच्चा कें सावधान करवो छेकै ।

'फैसल केरों जासूसी' कथाकार हरगानवी के द्वारा लिखलों उपन्यास सें अधिक खोजी पत्रकारिता के एक मंजलों पत्रकार डॉ. हरगानवी के, सब किसिम सें पूर्ण आरो चकराय दै वाला रिपोर्ट छेकै । आखिर एक जासूसी उपन्यास तें अंतिम रूपों सें एक मंजलों पत्रकार आरो लेखक द्वारा सनसनीपूर्ण घटना के रहस्योद्‌घाटने नी छेकै ।

—डॉ. अमरेन्द्र

शुक्रवार, २४ जुलाई २००९

सम्पादक : वैखरी
लाल खां दरगाह लेन, सराय,
भागलपुर—812002 (बिहार)
मोबाइल—9939451323

फैसल केरों जासूसी

फैसल जासूस छेकै । आबें ऊ बड़ों होय गेलों छै । साथें-साथें ओकरों कारनामो ओत्ते आश्चर्य पैदा करै वाला । अपराधी कें पकडै के ओकरों अलगे अन्दाज छै । ओकरों सोचो अलग । सबसें पहिलें ओकरों बचपनों रों एकठो किस्सा सुनों ।

लंच के छुट्टी जेन्है खत्म होलै तें, लड़का सिनी फेनू आपनों जमात में आवी गेलै । पढ़ाय शुरू होय गेलै । तभिये एक लड़का खड़ा होय कें कहलकै, ''गुरु जी, कोय हमरों पेंसिल चुराय लेने छै ।''

''ई जमात में कोय लड़का चोर नै छै'' गुरु जी कहलकै, ''तोहीं घरों में पेन्सिल भूली ऐलों होभैं ।''

'नै गुरुजी'' वैं लड़का फेनू कहलकै, ''हम्में लंच रों छुट्टी सें पहिलें आपनों पेन्सिल सें लिखलें छेलियै । कै एक ठो साथियों हमरा पेन्सिल सें लिखतें देखलें छै ।''

गुरुजी जमात के सब लड़का के ध्यान खींचतें कहलकै कि सब्भैं आपनों आपनों बस्ता देखै । सब्भैं आपनों आपनों बस्ता देखलकै, कि शाअत गलती सें पेन्सिल केकरो बस्ता में नै चललों गेलों रहें ।

फौरन सब लड़का गुरुजी के हुक्म के पालन करलकै । सब्भैं

आपनों-आपनों बस्ता देखलकै, मतरकि पेन्सिल तें केकरों जिम्मा नै छेलै ।

तखनिये कुछ लड़का इकट्ठे खड़ा होय कें कहलकै, ''हमरा सिनी तें कलास सें उठी कें निकली गेलों छेलियै, जों बैठलों रही गेलों छेलै तें फैसल । आबें फैसल ही ऊ पेन्सिल के बारे में बतावें पारें ।''

लड़का सिनी कें ई बात सुनी कें गुरुजी फैसल सें पूछलकै,'' की है बात सही छेकै कि जबें सब्भे लड़का चललों गेलों छेलै, तबें तोहें आपनों जग्घै पर बैठलों रही गेलों छेलैं ?''

''जी गुरुजी ।'' फैसल नें कहलकै ।

''तोहें आपनों ई साथी के बस्ता देखलें छेलैं ?''

''देखलें छेलियै । पेन्सिलो खुल्ला किताब पर रखलों छेलै ।'' फैसल नें जबाब देलकै ।

''तें तोहें पेन्सिल नै लेलें छैं ?'' गुरुजीं पूछलकै ।

''नै गुरुजी, हम्में पेन्सिल नै लेलें छियै ।'' फैसल के जबाब में सच्चाई छेलै ।

गुरुजीं फेनू कुछ नै पूछलकै, केन्हैं कि हुनी जानै छेलै कि फैसल चोर न हुऍ पारें ।

शाम कें छुट्टी होलै तें सब लड़का मिली कें वहें पेन्सिल के बात करें लागलै । यहाँ तक कि सब्भैं फैसल कें ही चोर कही रहलों छेलै ।

दोसरों दिन फेनू वहें घटना घटलै । लंच के छुट्टी के बाद वहीं रं एक लड़का खड़ा होय कें कहलकै, ''गुरुजी, हमरों रबड़ गायब छै ।''

ऊ लड़का फैसल के नगीच बेठै छेलै ।

गुरुजी आरो जमात के सब्भे लड़कां फैसल दिश देखलकै । कुछ तें खड़ा होय कें कहलकै, ''अइयो हमरा सिनी बाहर छेलियै, जबें कि फैसल यहीं रही गेलों छेलै ।''

एक लड़कां तें यहाँ तक कही देलकै कि रबड़ बिना शक फैसल नें ही चुरैलें छै ।

ई सुनत्हैं गुरु जी डांटी कें बोललै, ''चुप, फैसल कभियो चोर नै हुऍ पारें ।'' फेनू हुनी समझाय के लहजा में कहलकै, ''बिना देखलें, सोचलें समझलें केकरो चोर नै कहना चाही । फेनू फैसल तें तोरों साथी छेकौ । पढ़ै-लिखै आरो खेलै-कूदै में भी तोरा सें आगू छै । जों गलती सें वैं पेन्सिल

लैयो लेतियै तें स्वीकारो करी लेतियै ।''

ऊ दि शाम कें लड़का सिनी मिली कें फैसला करलकै कि आबें वैं सिनी फैसल सें बोलचाल बन्द करी देतै ।

अजीब खेल होय रहलों छेलै । तेसरों दिन एक लड़का रों तस्वीर रंगै वाला ब्रश गायब होय गेलै । आरो यहू दाफी दोसरा लड़का सिनी फैसल कें ही चोर ठहरैलकै । एक लड़का आपनों जग्घा सें उठलै आरो गुरु जी के नगीच जाय कें हुनकों कान में कहलकै, ''गुरु जी, अइयो लंच के छुट्टी में फैसल यहीं बैठलों रही गेलों छेलै । काहूँ नै गेलै । ब्रश जरूरे एकरों बस्ताहै में होतै । आपनें एकरों बस्ता रों तलाशी ला ।''

गुरु जी फैसल के बस्ता के तलाशी लैलें नै चाहै छेलै । हुनकों दिल कहै छेलै कि फैसल चोर नै हुऍ पारें । तहियो हुनी लड़का सिनी सें कहलकै ''तोरा सिनी में जे फैसल कें चोर समझै छैं, ऊ आगू आवें आरो खुद अपने हाथों सें ओकरों बस्ता के तलाशी ले । जों ब्रश निकली गेलै तें फैसल कें एत्तै छड़ी पड़तै कि दिन्हे में तारा नजर आवें लागतै ।''

मतरकि कोय्यो लड़का आगू नै बढ़लै । गुरु जीं फैसल सें कहलकै, ''तोहें आपन्हैं सें आपनों बस्ता सें सब चीज निकाली कें दिखाय दैं, ताकि सब लड़का कें संतोष होय जाय ।''

गुरु जी के कहला मुताबिके फैसल नें आपनों बस्ता के सब्भे टा सामान उलटी देलकै आरो कहलकै, ''चोर हम्में नै छिकां, मतरकि हम्में चोर के पता लगाय लेलें छियै गुरु जी । आपनें जो एक कुदाल मंगवाय दौ तें हम्में चोर कें पकड़ी लेवै आरो होलै तें गायब होलों चीजो सब मिली जाय ।''

गुरु जी के कहला पर एक लड़का माली के घर गेलै आरू कुदाल मांगी कें लै आनलकै । तबें फैसल नें कुदाल हाथों में लै कें कहलकै, ''चोर लंच के छुट्टी वक्ती क्लास में सुनाफड़ देखी कें आवी जाय छै आरो डेस्क पर राखलों हौल्कों, छोटों चीजों कें उठाय लै जाय छै । आजे हम्में ऊ चोर के पता लगैनें छियै । ऊ क्लास रों पीछू एक बिल में छुपलों बैठलों छै ।''

एतना कही फैसल ऊ बिल रों नगीच ऐलै । गुरु जी साथें आरो सब लड़का ओकरों पीछू-पीछू छेलै । फेनू फैसल नें बिल कें खोदना शुरू करलकै आरो ठीक दूए फीट के बादे वैसें एक चोर निकली कें भागलै । कुछ

लड़का तें ऊ भागतें चोर रों पीछू दौड़लै आरो बाकी लड़का सिनी बिल में रखलों ऊ गायब होलों सामान सिनी कें देखें लागलै ।

तबें की छेलै, वहें दिनों सें क्लास के लड़का सिनी फैसल कें जासूस कहवों शुरू करी देलकै ।

कॉलेज रों कैम्पस में बड़ी भीड़ छेलै । मोना क्लब आरो आजाद लाइब्रेरी क्रिकेट टीम के बीच आय फायनल मैच के दिन छेलै । दोनों टीम के खिलाड़ी सिनी देश सें बाहर के मैचो में खेली चुकलों छेलै । यही लें हजारो के संख्या में दर्शक कै एक दिनों सें वहाँ मौजूद छेलै । बाउन्ड्री लगत्हैं ऊ सब घुरी-घुरी ताली बजाय के एक टीम रों हौसला बढ़ाबै छेलै । दोसरों टीम खिलाड़ी कें आउट करी दाद हासिल करी रहलों छेलै ।

मैच देखै वाला में नामी जासूस फैसल साथे ओकरों सचिव ब्रेशा, दोनों के दोस्त दानिश, मौन, शिम्मी, गजाला आरो फराज भी मौजूद छेलै । फैसल आपनों सचिव ब्रेशा के साथें आय पहिलों दाफी मैच देखै लें ऐलों छेलै । ऊ भी मोना क्लब केरों अनुरोध पर, कैन्हें कि ऊ ई टीम केरों सह अध्यक्षो छेलै । चूँकि विद्यार्थिये जमाना सें एकरा खेल-कूद में बड़ी दिलस्पी छेलै आरो यैंनें कैएक ठो पुरस्कारो जीतलें छेलै, यही लें मोना क्लब नें ओकरा सहायक अध्यक्ष चुनी लेलें छेलै । हालांकि वैं टीम वास्तें आय तांय कुछुवो नै करलें छेलै । ओकरा फुर्सते नै छेलै । आय बड़ी मुश्किल सें वैं दू घण्टा रों समय निकाललें छेलै—आरो मैच देखै लें पहुँची गेलों छेलै ।

मैच देखै वाला में शहर के जानलों मानलों हस्ती साथें, सरकारी अफसर आरो बेशुमार लोगो छेलै । आजाद टीम केरों खिलाड़ी जोंन तेजी सें रन बनाय रहलों छेलै, ओकरा सें लोगों कें विश्वास होय गेलों छेलै कि आधे घण्टा में ई टीम जीत हासिल करी लेतै ।

मतरकि ठीक वही वक्ती मैदान में कैएक ठो धमाका होलै । दोनों तरफों सें दू-तीन खिलाड़ी कें फैसल नें जमीन पर गिरतें देखलकै । लोगों में

एकदम खलबली मची गेलै ।

सब्भे आपनोॅ-आपनोॅ जग्घा सें उठी खड़ा होलै । स्थिति ई छेलै कि चारो दिश शोर मची गेलोॅ छेलै । देखत्हैं-देखत्हैं मैदान में धुआँ भरी गेलै ।

ठीक हेकरे बाद होने धमाका गेटो पर होलै । वहू ठां घन्नोॅ धुआँ केरोॅ गुबार फैली गेलै । फेनू कैएक ठो चीखो सुनाय पड़लै आरो एकरे साथ गोलियो चलै के आवाज सुनाय पड़लै ।

फैसल के देहोॅ में जेना बिजली दौड़ी गेलै । वैनें हिन्नें-हुन्नें देखलकै फेनू तेजी सें ऊ धुआँ दिश दौड़ें लागलै । भीड़ के कारण रास्ता बनैवोॅ मुश्किल होय रहलोॅ छेलै । मतरकि ओकरोॅ फुर्ती-चुस्ती आरो प्रत्युत्पन्नमतित्व हेने मौकाहौ पर देखलोॅ जाय छै ।

सिपाही सिनी लोगोॅ कें मैदान सें हटाय के कोशिश करी रहलोॅ छेलै। वैं सिनी फैसल कें भी आगू बढ़ै सें रोकी देलकै । लोगें विकेट लुग घेरा बनाय रखलें छेलै । घेरा में एक आदमी जमीन पर पड़लोॅ होलोॅ छेलै । नै जानौं, केन्होॅ बम फटलोॅ छेलै कि धुआँ हटिये नै रहलोॅ छेलै । साफ-साफ कुछ नजरे नै आवी रहलोॅ छेलै ।

फैसल नें आपनोॅ साथी सिनी सें कहलकै, ''तोरा सब मैदान के किनारिये रहोॅ । पुलिस के सिपाही तोरा सिनी कें पहचानें नै पावी रहलोॅ छौं, यै लेली आगू बढ़ौ नै देतौं । हम्में जाय कें कोय किसिम सें ई पता करै के कोशिश करै छियै कि आखिर होलोॅ छै की ?''

ई कही फैसल गैलरी दिश मुड़ी गेलै । पुलिस के सिपाही केकरहौ आगू नै जावें दै । संयोगे सें एक सिपाही फैसल कें पहचानी लेलकै । वैं बड़ी अदब सें ओकरा सलाम करलकै आरो आगू बढ़ें देलकै ।

आगू बढ़ला पर एक जगह रुकी कें फैसल नें देखलकै, कहौ कुछ लोग केकरौ घेरी कें खड़ा छेलै ।

फैसल नें गौर करी कें देखलकै, अधेड़ उम्र के एक आदमी चित्त पड़लोॅ होलोॅ छै । ओकरोॅ दाड़ी आरो माथा के बाल आधोॅ पकी चुकलोॅ छेलै। ओकरोॅ बदन पर कारोॅ रंग के कीमती गरम सूट छेलै । आरो कोट के बटन खुललोॅ होलोॅ छेलै । भीतर के कमीज सफेद छेलै, जेकरोॅ सामना वाला हिस्सा लहू सें लाल होय गेलोॅ छेलै ।

फैसल नें देखलकै कि लहू ओकरोॅ कमीज के भीतर सें बही रहलोॅ

छेलै आरो यहू कि ढेरे लहू जमीन पर फैली चुकलोॅ छेलै ।

फैसल के दोनों आँख सोचै के अन्दाजा में सिकुड़ी गेलै । अभी ऊ दुर्घटना के भीतर तांय जावो नै पारलेॅ छेलै कि ओकरोॅ नजर एक ठो भारी भरकम आदमी पर पड़लै । ऊ इन्सपेक्टर हबीब छेलै, जे लम्बा लम्बा साँस लै रहलोॅ छेलै । चार-पाँच सिपाही ओकरोॅ पीछू-पीछू छेलै । इन्सपेक्टर के नजर फैसल पर पड़लै तेॅ भीड़ केॅ हटैतें ऊ फैसल लुग पहुँची गेलै ।

''आपनें यहीं छौ । खुदा के शुक्र छै । मतरकि है सब होलै केना ?''

''हत्या'' फैसल नें गंभीरता सें कहलकै, ''आरो कोय शक नै कि हत्यारा बड़ा जबरदस्त निशानेबाज छै । हम्मू हैरान छी एक्के ठियां तीन गोली रोॅ निशाना कोय आसान काम नै छेकै ।''

''आपनें के ई बारे में की ख्याल छौं ?'' इन्सपेक्टर हबीब नें पूछलकै ।

''जहाँ तक हम्में समझै छियै ई हत्या गोली सें नै होलोॅ छै ।''

इन्सपेक्टर चकराय केॅ रही गेलै । वैं पूछलकै, ''तेॅ की, यैं आत्महत्या करी लेलकै ? गोली नै लागलै ? खून केना होलै ?''

''हमरोॅ साथ आवोॅ'' फैसल नें कहलकै, ''आरो आपनोॅ सिपाही सिनी सें कही दौ कि केकरौ गैलरी सें बाहर नै जावै दै । हम्में लहाश केॅ जरा अच्छा किसिम सें देखी लै छियै, तभिये कोय बात पूरा विश्वास रोॅ साथें कहेॅ सकवौं ।

फैसल ऊ जख्मी उधेड़ के नगीच पहुँची केॅ थोड़ोॅ नीचें दिश झुकलै । वैंने पहिलें जख्मी के चेहरा देखलकै, फेनू ओकरोॅ हाथ उठाय केॅ गौर सें देखेॅ लागलै । कोटोॅ के आस्तिनो वैं ऊपर चढ़ैलेॅ छेलै ।

तखनिये एक सिपाही वैठां हाफतें होलोॅ पहुँचलै आरो इन्सपेक्टर सें कहलकै, ''हुजूर एक ठो आरो लहाश.....मैदान रोॅ पूर्वी गेट पर....ओकरोॅ माथा सें खून बही रहलोॅ छै ।''

इन्सपेक्टर जेना एकदम सें बौखलाय उठलै ।

लहाश सें आपनोॅ नजर हटैतें फैसल नें इन्सपेक्टर सें कहलकै, ''यैठां आपनें आपनोॅ दू-तीन सिपाही पहरा पर लगवाय दौ, फेनू लोगोॅ सें ई पूछताछ करोॅ कि जबेॅ धुआँ के बम फुटलोॅ छेलै, तबेॅ कोय की कातिल केॅ

देखलें छेलै ? जे लोग यैठां मौजूद छै, ओकरो सिनी सें पता लगैलों जाय कि ओकरों लुग के-के बैठलों छेलै आरो के ओकरों गैलरी सें गायब होय चुकलों छै ? कोय्यो आदमी कें लहाश के नगीच आवै लें नै देलों जाय । हम्में कोय निर्णय पर पहुँचै के कोशिश करी रहलों छियै ।''

इन्सपेक्टर फैसल रों सुझाव पर सिपाही कें ड्यूटी पर लगाय देलकै ।

आरो जे सिपाही अभी-अभी खबर देनें छेलै, ऊ बोललै, ''हुजूर, हेड कॉन्सटेबुल सगीर खान तोरा मैदान में बुलाय रहलों छौं । एक लड़का घुरी-फिरी लहाश सें लिपटी कें कानी रहलों छै, चिल्लाय रहलों छै ।''

इन्सपेक्टरें फैसल दिश देखलकै, फेनू सिपाही साथें आगू बढ़लै । तखनी तांय दानिशो वैठां पहुँची गेलै ।

''तोहें गेट दिश खड़ा छेलौ, वहाँ की देखलौ'' फैसल नें पहिलों सवाल यहें कहरलकै ।

''हम्में तें कुछ नै देखलियै । होना कें ई अनुमान छै कि जबें हत्यारा भागी रहलों होतै, तबें चौकीदारें ओकरा भागै सें रोकलें छेलै आरो ऊ स्थिति में हत्यारां कोय डण्डा सें ओकरा पर प्रहार करी देलें होतै, जेकरे कारण चौकीदार बेहोश होय गेलै । एक बच्चा गेट सें बाहर जाय रहलों छेलै कि ओकरों नजर चौकीदार पर पड़लै.....चौकीदार जमीन पर चित्त पड़लों छेलै । बच्चा घबराय गेलै आरो शोर मचाबें लागलै—खून, खून, खून.....। हौ चीख सुनी कें हम्में गेट दिश भागलियै । चौकीदार के दिल रों धड़कन देखलियै । ऊ मरलों नै छेलै । आकरों माथों सें खून बहतें देखी कें बच्चा चीखें लागलों छेलै ।''

''गजाला, ब्रेशा आरो फराज कहाँ छै ?''

''पुलिसें हुनका सिनी कें हिन्नें नै आवें देलकै'' दानिश नें कहलकै, ''तोरों की ख्याल छौं—हत्यारा के हुऍ पारें ?''

''अभी की कहलों जावें पारें'' फैसल नें कहलकै, ''स्थिती देखी कें हम्में तें यही नतीजा निकालें सकलें छियै कि हत्यारा एक नै, दू होतै । खैर, हमरों साथ आवों ।''

दानिश ओकरों पीछू-पीछू चलें लागलै । पुलिस वाला गैलरी में मौजूद लोग सिनी कें एक दिश धकेलवो करी रहलों छेलै । वै सिनीं हत्यारा

के बारे में पूछताछ शुरू करी देलें छेलै ।

जैठां लहाश पड़लों छै, फैसल वैठां पहुँची रुकी गेलै । वैं बच्चा रों आवाज सुनलकै । ऊ कपसी-कपसी कही रहलों छेलै, ''अफजल भाय तोहें अकेल्ले कैन्हें चल्लों गेला, हमरौ साथ लै चलों ।''

इन्सपेक्टर ऊ लड़का कें पकड़लें लहाश से दूर लें जाय रहलों छेलै ।

दोनों टीम के खिलाड़ी सिनी उदास आरो परेशान छेलै । हुन्नें सबके चेहरा पर दुःख उपटलों होलों छेलै । पुलिस फोटोग्राफर लहाश के तस्वीर उतारै में छेलै । इन्सपेक्टर सहित ऊ सब लहाश के आसपास आँख गड़ैलें होलें छेलै कि कहीं गोड़ो के निशान मिली जाय ।

लड़का कें एक कुर्सी पर बिठाय कें इन्सपेक्टर फेनू सें फैसल के नगीच आवी गेलै आरो कहलकै, ''लहाश देखी ला ।''

दोनों आगू बढ़लै । दानिश पीछुए रही गेलै ।

अफजल रों कमीज लहू सें लाल होय चललों छेलै । फैसल ने लहाश के आस्तीन ऊपर चढ़ैलकै आरो उठी कें खाड़ों होय गेलै । एक क्षण लेली चुप्पी साधते ऊ बोली पड़लै, ''इन्सपेक्टर साहब, मामला बड़ी आश्चर्यजनक आरो रहस्यपूर्ण छै । है कोय मामूली हत्या रों केस नै छेकै । हम्में अम्पायर से बात करै लें चाहबै ।''

इन्सपेक्टर नें ओकरा खिलाड़ी सिनी के बीच आनलकै । वहाँ सब्भे आपनों साथी बॉलर अफजल रों मौत पर मुरझैलों छेलै । खिलाड़ी सिनी सें हटी कें फैसल अम्पायर के सामना आवी कें ओकरों सें पूछलकै ''हम्में तोरा सें कुछ सवाल पूछै लें चाहै छियौं आरो सब में पहिलें तोंहे ई बतावों कि बम कौनें फेंकलें छेलै ?

''जखनी बम फेकलों गेलै, तखनी तें हमरों ध्यान कट के दिश छेलै । यही सें हम्में कुछ नै देखें पारलियै ।''

''कोय खास बात तोरों बुझैलों छेलै ?''

''हों, एक खास जरूर बुझैलों छेलै, मतरकि ओकरों जिक्र शायत मुनासिव नै होतै ।''

''ओकरा तोहें जरूर कहों, हुएँ सकें छै कि तोरों नजर में जे बेमानी छै, हमरा ओकरहै सें कोय रास्तौ तें मिलें सकें छै ।''

फैसल के बात सुनी कें अम्पायरें कहना शुरू करलकै, ''बम फटला के बाद जबें धुआँ फैलें लागलै, तखनी नीचला उड़ान लेतें एक गिद्ध कें हम्में आपनों ओर ऐतें देखलें छेलियै । हम्में नै कहें पारौं कि ऊ मैदान में केना ऐलों छेलै । देखतैं देखतैं धुआँ घन्नों होय गेलों छेलै आरो ऊ ओकरा में गुम होय गेलै । ठीक वही वक्ती गोलियो चलै के आवाज सुनाय पड़लै । फेनू केकरो चीख उभरलों छेलै । तबें हम्में अफजल कें लड़खड़ाय कें गिरतें देखलें छेलियै । हम्में घबराय कें जेन्है आगू बढ़लियै तें हम्मू गिरी पड़लौं ।''

ई सुनी कें फैसल रों आँख सोच में डूबी गेलै ।

''की सोची रहलों छों ?'' कुछ देरी के बाद इन्सपेक्टरें पूछलकै ।

''हम्में समझै छियै कि अफजल रों मौत गोली लगला सें नै होलों छै ।''

इन्सपेक्टर साथें आरो खड़ा खिलाड़ियो चौंकी कें फैसल दिश देखें लागलै ।

''ई तोहें की कही रहलों छों ?'' इन्सपेक्टरें हैरान होतें कहलकै ।

''हम्में कोय गलत बात नै कही रहलों छियै । धुआँ आरो गिद्ध रों बारे में तोहें सुनी चुकलों छौ । ओकरों पीछू गहरा राज छै ।''

''मतरकि गोली चलै के आवाज तें कैएक लोगें आपनों कानों सें सुनलें छै ।'' अम्पायरें कहलकै तें फैसल मुस्कराय पड़लै । कहलकै, ''है गोली सिनी हमरा धोखौ दै वास्तें तें चलैलों जावें सकै छें । गिद्ध संयोगेवश नै आवें पारें । ओकरा जानी-बूझी कें भी तें भेजलों जावें सकै छें ।''

''आखिर कौंनें भेजलें होतै ?''

''बतावै छियौं'' फैसल घुमी कें इन्सपेक्टर दिश होलै, ''पहिलें हमरों साथ आवों । ई लड़का सें बात करी देख छियै, जे अभियो तांय कानी रहलों छै ।''

दानिशो हुनका सिनी के साथें लड़का लुग गेलै । कुछ लोग ऊ लड़का कें घेरी खड़ा छेलै । फैसल लड़का के सामना होतें पूछलकै, ''तोरों नाम की छेकौं बाबू ?''

''राशिद ।''

अफजल आरो तोहें, दोनो भाय छेकैं ?''

''नै ।''

''हमरा तोरॉ दुःख के अन्दाजा छै, मतरकि आबें जरूरत हत्यारा कें पकड़ै के छै । तोरा चाही कि तोहें हमरॉ साथ दें ।''

''हम्में केना साथ दिएँ पारौं । हम्में आबें घॉर जाय लें चाहै छी ।''

लड़का फेनू कानें लागलै । इन्सपेक्टरें ओकरॉ कंधा थपथपैतें कहलकै, ''घबड़ावॉ नै, हम्में तोरॉ घॉर में खबर भिजवाय देलें छियौं । आबें तोहें चुप होय जा ।''

ओकरॉ चुप होथैं फैसल नें पूछलकै, ''तोरॉ नजर शुरुवे सें आपनॉ भाय पर लागलॉ हातौं । आबें ई बतावॉ कि जखनी घटना घटलै, तखनी तोहें की देखलौ ?''

''हम्में धुआँ उठतें देखलियै । चलतें हुएँ गोली सिनी के आवाज सुनलियै । भाय जान कें गिरतें होतें देखलियै, तबें हम्में दौड़ी पड़लॉ छेलियै ।''

''कहीं तोहें धुआँ में आरो कछ देखलें छेलौं ?''

राशिद कुछ देरे लेली सोचतें रहलॉ छेलै, फेनू कुछ संकोच सें बोललै, ''हों जेन्है धुआँ उठलै, हम्में एक गिद्ध उड़तें हुएँ देखलियै । मतरकि गिद्ध के उड़लॉ सें की होय छै । हमरा जावें दें, हम्में घॉर जैवॉ ।''

''ठीक छै, घॉर जा ।'' फैसल नें ओकरा घॉर जाय के इजाजत दै देलकै ।

लड़का के उठत्हैं इन्सपेक्टरें कहलकै, ''आपनॉ घर के पता, टेलीफोन नम्बर आरो जे कछ भी ई लहाश के बारे में पता छौं, सब लिखैलें जा ।''

''कमाल करै छॉ !'' फैसल नें कहलकै, ''अफजल कें नै जानै छॉ ?''

''एकदम नै, हमरा क्रिकेट सें कोय दिलचस्पी नै छै । हों फुटबॉल आरो टेनिस के खिलाड़ी सिनी कें जरूरे जानै छियै ।''

''होना कें अफजल के बाबू मुहम्मद अकबर नामी खेलाड़ी छेलै, हुनकॉ नाम तें सुनले होवौ ।''

''ओहो'' इन्सपेक्टरें अफसोस करतें बोललै, ''अकबर कें के नै जानै छै । हुनी तें कैप्टनो रही चुकलॉ छेलै । तें ई अफजल आरो राशिद हुनके बेटा छेकै ।

''जा रशीद जा, जों हमरॉ कोय्यो जरूरत पड़ौं तें, हमरा याद

करियोॅ ।'' फैसल नें कार्ड में छपलोॅ आपनोॅ नाम आरो पता राशिद कें थमैंतें कहलें छेलै । ई कार्ड ब्रेशा के कहला पर छपवैलोॅ गेलोॅ छेलै ।

ठीक वही वक्ती ब्रेशा साथें गजालौ आवी गेलै । फैसल नें ऊ दोनों आरो दानिश कें अंगुरी रों इशारा करलकै । सब ओकरोॅ इशारा समझी गेलै कि राशिद रों पीछा करना छै । होना कें ब्रेशा आरो गजाला ऊ लड़का के नामो तक नै जानै छेलै आरो नै तें मालूम छेलै कि मृतक अफजल सें ओकरोॅ की रिश्ता छेकै । जबें ऊ सिनी मैदान सें बाहर निकली ऐलै, तबें दानिश नें ऊ दोनों कें जल्दी सें सब जानकारी दै देलकै ।

फैसल नें इन्सपेक्टर सें कहलकै, ''आबोॅ, आबोॅ ! दुसरो लहाश हमरा सिनी देखी लिऐ'' आरो चलतैं-चलतैं वै कहलकै, ''आबें हमरा विश्वास होय गेलोॅ छै कि हत्यारा एक नै, बल्कि दू छेलै ।''

''ई तोहें केना कहें सकै छौ ?'' इन्सपेक्टरें पूछलकै ।

''ई बात ई आधार पर कही रहलोॅ छी कि एक्के वक्ती में दू हत्या होलै । दोनों हत्या अलग-अलग जग्घा में होलै आरो दोनों जग्घोॅ के बीच काफी फासला छै । कोय्यो हत्यारा एक जग्घा में खून करला रों बाद पलक मारतैं दोसरा जग्घा पर नै पहुँचें पारें । हत्या एक्के वक्ती में होलै आरो दू आदमी मारलोॅ गेलै ।''

ई दलील कें इन्सपेक्टर मानै वास्तें मजबूर छेलै ।

जे लोग मैच देखै लें ऐलोॅ छेलै, ऊ सिनी अफसोस करी रहलोॅ छेलै कि एत्तें जबरदस्त मैच अधूरे रही गेलै । नै केकरो हार होलै, नै केकरो जीत । आबें लोग मैदान सें आहिस्ता-आहिस्ता जाबें लागलोॅ छेलै ।

फैसल आरो इन्सपेक्टर ऊ जग्धा में पहुँची गेलोॅ छेलै, जैठां एक अधेड़ के लहाश पड़लोॅ होलोॅ छेलै । कुछ सिपाही लहाश के निगरानी करी रहलोॅ छेलै ।

फैसल झुकी कें अधेड़ के लहाश देखें लागलै । ओकरोॅ भोंवां अजीबे किसिम के लागलै । लहाश के आँखी पर मोटोॅ शीशा केरोॅ चश्मा छेलै । बदन पर कोट छेलै ।

वैंनें लहाश के तोंद पर हाथ रखले छेलै कि हठाते ऊ चौंकी पड़लै चौंके के सांथे ओकरोॅ ठोरोॅ पर हल्का रं मुस्कानो फैली गेलै । वैनें कमीज रों आस्तीन हटाय कें ओकरोॅ बाँही फेनू एक दाफी देखलकै आरो हाथ झाड़ी

कें उठी गेलै । इन्सपेक्टर दिश देखतें हुएँ वैं कहलकै, ''ई कोय बूढ़ा आकि अधेड़ आदमी के लहाश नै छेकै ।''

आसपास रों खड़ा लोग सब ई बात पर हैरान होय कें रही गेलै । ऊ सब कभियो लहाश कें देखै, कभियो फैसल दिश देखें लागै । परेशान होय रहलों इन्सपेक्टर बोली पड़लै, ''हमरों समझ में कुछुवो नै आवी रहलों छै ।''

''अभी समझाय दै छियौं इन्सपेक्टर साहब, मजकि ठहरौ । पहिलें फोटोग्राफर कें आपनों काम तें करी लैलें दौ । आरो ई बहुत जरूरियो छै ।''

कुछ देर बाद फैसल नें फोटोग्राफर कें रुकै के इशारा करतें कहलकै, ''आवें एक दूसरों आदमी के फोटू लै वास्तें तैयार रहें ।'' आरो एतना कहतें वैनें हाथ बढ़ाय कें लहाश रों भौआं उखाड़ी देलकै ।

लोग सिनी ताज्जुब सें देखलकै कि ओकरों भौंआं के पीछू कारों भौआं मौजूद छै । फैसल नें फेनू हाथ बढ़ाय कें ओकरों छोटों आरो खूबसूरत दाढ़ी खींची लेलकै । चेहरा पर आबें कोय दाढ़ी नै छेलै । दाढ़ी के नीचू साफ चेहरा नजर आवी रहलों छेलै ।

''अरे ई तें कोय युवक छेकै ।'' इन्सपेक्टर बड़बड़ैलै ।

फैसल नें पहिलें लहाश रों कोट के बटन खोललकै । फेनू कमीज रों बटन खोली देलकै । लोग सिनी बड़ी दिलचस्पी आरो हैरत सें ई सब देखी रहलों छेलै । ऊ सिनी वास्तें ई जादुई दृश्य सें कम नै छेलै । फैसल नें लहाश के पैन्ट सें कमीज खींची कें बाहर करलकै । फेनू आपनों हाथ ओकरों पैन्ट के दिश सें कमीज में डाली देलकै । आरो जबें बाहर करलकै तें हाथों में रुय्या के मोटों रं पैड छेलै ।

रुय्या के पैड दिखैतें फैसल नें कहलकै, ''ई रहलै ऊ अधेड़ आदमी रों नकली तोंद ।''

''कमाल होय गेलै । एकरों तोंदो नकली छेलै ।'' लोग सब बोली उठलै ।

तखनी इन्सपेक्टरें फैसल के प्रति श्रद्धाभाव व्यक्त करतें कहलकै, ''तोहें तें सचमुचे में कमाल करी देलौ । सैंकड़ो लोगें लहाश देखलें होतै, मतर तोरों सिवा कोय नै समझें सकलै कि एकरों सच्चाई की छेकै । एक बात समझै में नै ऐलै कि एकरा मरनै छेलै तें भेस बदली कें कैन्हें मरलै ।

फेनू यही ठां मरना की जरूरी छेलै । कोय दुसरों जग्घों जाय कें कैन्हें नी मरलै ?''

आस-पास रों लोग हठाते खिलखिलाय कें हँसी पड़लै । आपनों बात पर हँसतें देखी कें इन्सपेक्टर आपन्हौ हाँसी पड़लै ।

फैसल नें मुस्करैतें कहलकै, ''ई तें मालूम करै लें पड़तै कि आखिर ई यहीं आवी कें कैन्हें मरलै आरो फेनू हुलिया बदली कें कैन्हें मरलै ?'' ई कहला साथें वैं लहाश के बाँही देखें लागलै । बाँही पर तीन सुराख छेलै । हर सुराख के किनारी पर सें चमड़ी कुछ उधड़ी गेलों छेलै । तीनों सुराा में सें बीच के सुराख कुछ ज्यादा गहरा छेलै । मतरकि तीन सुराख एक्के सीध में नै छेलै । कुछ टेढ़ों छेलै या कुछू तिरछों कही ला ।

फैसल उठी खाड़ों होलै । वैं इन्सपेक्टर सें कहलकै, ''आवों, जरा आबें फेनू सें अफजल केरों लहाश देखलों जाय । एकरे बाद पता चली जैतै कि अधेड़ के हुलिया में ई नौजवान के हत्या केना होलै । साथे-साथ अफजलो केरों खून केना होलै ।''

ऊ दोनों फेनू मैदान में जाय पहुँचलै । कुछ लोगें हुनका सिनी के साथे साथ ऐलों छेलै । फैसल एक दाफी फेनू ऊ लहाश पर झुकलै । आश्चर्य कि ओकरों गर्दन पर होने तीन सुराख छेलै, जेहनों कि अधेड़ बनलों नौजवान के बाँही पर छेलै ।

फैसल नें इन्सपेक्टर सें पूछलकै, ''की तोहें बतावें पारै छौ कि मारलों गेलों ई आदमी के गर्दन पर ई तीन सुराख केना छै ?''

''गोली के सुराख छेकै आरो की ?''

''इन्सपेक्टर साहब, तहूँ बस कछुवा के खाले भर देखै छौ, है नै देखै छौ कि कछुवां आपनों गर्दन खाल में कहाँ छुपाय रखलें छै । ई निशान आकि सुराख गोली के नै छेकै ।'' फैसल नें मुस्करैतें कहलकै ।

इन्सपेक्टरें बगल झाँकतें कहलकै, ''तें फेनू ई सुराख कोन चीजों के छेकै ?''

''मौत रों पंजा केरों निशान छेकै ।'' फैसल बोललै ।

''मौत रों पंजा के निशान !'' इन्सपेक्टर हैरान रही गेलै ।

''जी हों, एकरा मौत रों पंजे कहें पारों ।''

''की मतलब ?''

''मतलब कि दोनों आदमी रों मौत के कारण छेलै—मौत रों पंजा । अच्छा ई बतावों कि जे लोग गैलरी में मौजूद छेलै, ऊ सबसें पूछताछ के दायित्व केकरौ पर छेलै ? अधेड़ बनलों ई नौजवान रों जबें खून होलै तें कोय्यों आँखी देखलों गवाही देलें छै ?''

''हम्में खुद्दे वैठां मौजूद छेलियै ।'' एक आदमी आगू बढ़ी कें कहलकै ।

''तोरों नाम ?'' फैसल नें पूछलकै ।

''हमरा मुशरफ इमाम कहै छै आरो जमालुद्दीन चक रों मॉडल कॉलोनी में रहै छी ।''

''हों तें, तोहें की देखलौ ?''

''जबें धुआँ छँटलै तें, हम्में वैठां एक ठो आदमी कें देखलियै । ओकरों दाढ़ी कारों-कारों छेलै । ओकरों आँखी पर कारों चश्मा छेलै । वैं नीला रंग के लम्बा कोट पिहनी राखलें छेलै । फुलपैंट गोड़ों सें सटलों-सटलों छेलै । कोट के नीचें वैं ऊनी कमीज पिन्ही राखलें छेलै, जे बादामी रंग के छेलै । गल्ला में फूलदार टाई बांधलों होलों छेलै । मजकि एक खास बात यहू छेलै कि ओकरों एक हाथ गायब छेलै । कोट रों एक आस्तीन झुली रहलों छेलै ।''

''आरो ?'' कहतें-कहतें फैसल सोच में डूबी गेलै । कुछ पलों के बाद वैं इन्सपेक्टर सें कहलकै, ''आबें हम्में चलै छियौं । तोहें लहाश आरनी उठवावों । होना कें तोरा चार बातों पर ध्यान रखना छौं । ऊ नौजवान कें बुलाय कें ई अधेड़ के लहाश के पहचान करवाना छौं । ऊ लम्बा कोटवाला आदमी के तलाशी करवाना छौं । अफजल के जिनगी के स्थिति- परिस्थिति के बारे में जानकारी लै कें कोशिश करों आरो जतना जल्दी हुऍं, हमरा रिपोर्ट दै के कोशिश करों ।''

''जी बहुत अच्छा ।'' इन्सपेक्टरें मुस्तैदी सें कहलकै ।

ब्रेशा, गजाला आरो दानिश बड़ी देर सें राशिद रों पीछा करी रहलों छेलै । राशिद पैदले चली रहलों छेलै । चलतें-चलते ऊ डाकबंग्ला रों नगीच पहुँची गेलै । ब्रेशां दानिश कें केहुनी मारतें कहलकै, ''दानिश, ऊ तें एक सीध में ही आगू बढ़लों जाय छै, जेना अपना आप में ही नै रहें ।''

''हों, ई बात तें छै ।''

''मतरकि ओकरा सें ज्यादा बेखबर आरो असावधान तोरा दोनों छौ ।'' गजाला बोललै ।

''केना ?'' दोनों हठाते चौकी पड़लै ।

''तोरा दोनों आगू-पीछू देखौ तें पतौ रहौ । हुन्नें बायां दिश दुकान के नगीच देखौ । ऊ लखनऊ मिठाय भण्डार रों खम्भा के पीछू । एक आदमी मैदाने सें पीछा करतें यहाँ तक ऐलों छै आरो लगातार हमरा सिनी साथें राशिद कें देखलें आवी रहलों छै ।'' गजालां बतैलकै ।

''अरे, तें तहूँ जासूस होय गेलों छों ।'' दानिश नें आश्चर्य प्रकट करलकै ।

''आखिर सहेली केकरों छेकियै । ब्रेशा रों प्यार के कुछ तें असर होन्है चाहियों ।''

''आरो नै तें की'' ब्रेशां कहलकै, ''दानिशे सें पूछों । ई एक नम्बर के डरपोक छेलै आरो आपनों गोल्डी सें ई कदर डरै छेलै कि छीः । ऊ तें जबें दू एक केस में शामिल होलै आरो हमरों करीब ऐलों छै तें, आपना में कुछ हिम्मत पैदा के कोशिश करी रहलों छै ।''

''ई गोल्डी के की खिस्सा छेकै ?'' गजालां चमकतें आँख सें पूछलकै ।

''कुछुवो नै, ब्रेशा तें उटपटांग हाँकतै रहै छै ।''

''हम्में गलत नै बोलै छियै । आबें देखौ, हमरों नगीच रहियो कें आपना में जासूसी रों शुध-बुध पैदा नै करें सकलें छै । मजकि गजाला, आय तें तोहें कमाल करी देलौ । जिम्मेदारी रों खयाल रखतें पीछा करतें रहलें छौ ।''

''मजकि जिम्मेदारी के ज्ञान तोरौ तें नै छौं ।'' दानिश जली कें बोललै ।

''हों, हमरौ सें गलती होय गेलों छै । कभी-कभी होय जाय छै । हों, तें गजाला, तोहें ऊ आदमी के हुलिया देखलें छौ । ऊ अभी सब्भे के आड़ों में छै । जल्दी सें ओकरों हुलिया बयान करी लें—ओकरों दाढ़ी कारों छै, आँखों पर कारों चश्मा छै । बदन पर नीला रंग के लम्बा कोट छै । फुलपैंट तंग आरो भूरा रंग के छै । कमीज बादामी रंग के छै, गल्ला में फूलदार टाई बंधलों छै आरो ओकरों दायां दिश के हाथ के आस्तीन झूली रहलों छै । शायत दायां हाथ कटलों रहें ।''

''तोहें तें बड़ी पैनों आँखी सें ओकरों जायजा लेनें छौ । धन्यवाद गजला । आबें तोरा होशियार रहना छौं आरो ई जाहिर नै होना देना छौं कि हमरा सिनी राशिद के पीछा करी रहलों छियै । अच्छा तें यही होतै कि हमरा सिनी आबें राशिद के पीछा छोड़ी कें ऊ आदमी के पीछा करौं ।'' दानिश बड़बड़ैलै ।

''नै, नै, हम्में ई सुझाव नै दिऍ पारौं, हमरा आपनों कर्त्तव्य के पालन करतें रहना छै ।'' ब्रेशा के ई राय दोनों कें अच्छा लागलै ।

मतरकि एक जग्धों रुकी कें वैं सिनी राशिद दिश सें आपनों ध्यान हटाय लेलकै । होना कें है दिखावे भर लेली छेलै, नै तें तीनों ई देखिये रहलों छेलै कि आखिर राशिद कन्नें जाय रहलों छै ।

दानिश ऊ दोनों सें हटी कें ग्रैण्ड हॉटल के नगीच जाय कें खाड़ों होय गेलै । तखनिये राशिद नें एक ऑटो टैम्पो रुकवैलकै । ड्रायवर सें कुछ कहलकै आरो ऊ वैमें सवार होय गेलै ।

राशिद कें सवार होत्हैं ऊ आदमी सामना में आवी गेलै आरो तेजी सें चलें लागलै आरो देखत्हैं, देखत्हैं वहू एक टेम्पो पर सवार होय गेलै । ई देखी दानिशो एक टेम्पो रुकवैलकै आरो ड्रायवर सें कहलकै, ''ऊ आगू वाला दोनों टेम्पो रों पीछा करना छै । हम्में पुलिस के आदमी छेकियै ।'' ई कहतें ऊ ड्रायवर के बगल में बैठी रहलै ।

टेम्पो के स्टार्ट हुऍ सें पहिलें ब्रेशा आरो गजाला पिछुलका सीटों पर बैठी चुकलों छेलै । ड्रायवरें मुड़ी कें ऊ दोनों के दिश देखलकै । फेनू दानिश दिश देखी कें कुछ कहिये लें चाहै छेलै कि दानिश नें ओकरा टेम्पो स्टार्ट करै लें कहलकै ।

सबसें आगू राशिद के टेम्पो छेलै, ओकरा पीछू कोटवाला आदमी के

आरो ऊ दोनों रों पीछू कुछ दूरी सें जासूस सिनी के टेम्पो दौड़ी रहलों छेलै । राशिद केरों टैम्पो टूरिस्ट सेन्टर एम्प्लायमेण्ट एक्सचेंज आरो एम. एल. ए. फ्लैट्स सें आगू निकली कें अनीसाबाद कॉलोनी दिश मुड़ी गेलै । कि एकाएक ब्रेशां दानिश रों कन्धा हिलैलकै ।

"की बात छेकै ?" वैं पीछू मुड़ी कें पूछलकै ।

"बीच वाला टैम्पो तेज होय गेलों छै ।" ब्रेशां बतैलकै ।

"हों, ऊ आपनों टैम्पो राशिद केरों टैम्पों सें आगू निकाली लै चाहै छै ।"

"मतरकि हेनों चाहै छै कैन्हें ?" गजालां पूछलकै ।

"रास्ता सुनसान छै । आस-पास आबादियो कम छै । ओकरों नीयत खराब मालूम होय छै । आखिर वैं पीछा कैन्हें करी रहलों छै ।"

"हों, मामला खतरनाक बुझावै छै ।" गजालां कहलकै ।

"की तोहें डरी रहलों छों ?" ब्रेशां पूछलकै ।

"नै, डरबों कथी लें । गजालां एक लम्बा साँस लेतें कहलकै ।

"बस तें फेनू इत्मीनान सें बैठों । जे कुछ होना होतै, होय कें रहतै ।"

"की कोय लफड़ा छै की ?" ड्रायवरें मुड़ी कें वैं सबसें पूछलकै ।

"नै नै, हेनों कोय बात नै छै, मजकि देखों, आगू की होय छै ।" तीनों के नजर सामनें दिश लागलों होलों छेलै ।

सड़क रों ई हिस्सा वीरान छेलै । अभी तांय रात नै होलों छेलै, मतरकि सूरज आँख सें जरूरे ओझल होय चुकलों छेलै । साथे-साथ बिजली रों बत्ती सिनी भी जगमगावें लागलों छेलै ।

कि तीनों देखलकै—कोटवाला आदमी रों टैम्पो राशिद के टैम्पो सें आगू निकली गेलों छै आरो आगू निकलत्हैं वैं आपनों टेम्पो कें तिरछों करी कें रुकवाय देलकै । एकरा सें राशिद के टेम्पोओ रुकी गेलै । एतना होला पर ऊ आदमी टैम्पो सें उतरलै आरो राशिद के कलाई पकड़ी कें एक झटका में टैम्पो सें बाहर खींची लेलकै । राशिद चीखें लागलै, मतरकि ऊ आदमी ओकरा जबरदस्ती आपनों टैम्पो में घुसावें लागलै ।

दानिश रों खून खौली गेलै । वैं आपनों टेम्पो के ड्रायवर सें कहलकै, "आपनों गाड़ी ऊ आदमी के गाड़ी नगीच जाय कें रोकों ।"

ऊ आदमी के पास में तेज धार वाला लम्बा चाकू छेलै, जेकरे कारण अगला दोनों गाड़ी के ड्रायवर सहमलों होलों छेलै ।

गाड़ी के रुकत्हैं दानिशें आपनों जूता सें ऊ आदकी के चाकूवाला हाथों पर किक लगाय देलकै । यै में दानिश एत्तें फुर्ती दिखैलें छेलै कि ऊ आदमी कें चाकू चलावै के मौकाहै नै मिललों छेलै । दर्द से ऊ आदमी के मुँहों सें कराह निकली ऐलों छेलै । राशिद के हाथ छोड़ी कें ऊ जल्दी सें आपनों टैम्पो में बैठी गेलै आरो जल्दिये सें चाकू ड्रायवर के गर्दन पर रखतें कहलकै, ''गाड़ी उड़ाय लै चल, नै तें.....।''

ड्रायवरें ऊ आदमी के हुकुम मानै में आपनों जान के खैर बुझैलकै, से टैम्पो भगाय कें चलतें बनलै ।

हाथ छुटत्हैं, राशिद दानिश सें लिपटी कें कानें लागलै, नै तें दानिश एत्तें आसानी सें भागें नै देतियै ।

''तोरा कोय चोट तें नै ऐलौं ?'' ब्रेशां पूछलकै ।

''नै, तोरा सब के धन्यवाद, मतरकि ऊ आदमी हमरा जबरदस्ती कैन्हें लै जाय लें चाहै छेलै ।''

''हमरा मालूम नै ।'' ब्रेशा बोललै, ''संयोगे सें हमरा सिनी हिन्नें सें गुजरी रहलों छेलियै, वरना ऊ तोरा उठाय लै जाय में एकदम सफल होय जैतियौं ।''

''हम्में घोंर जाय लें चाहै छियै । अभी कुछ देर पहिलें यूनिवर्सिटी कैम्पस में हमरों भाय जान के कोय्यों खून करी देलें छै ।''

''तोरों घोंर कहाँ छौं, हम्में पहुँचाय देवौं ।''

''यही कॉलोनी में छै । थोड़ों आगू, क्वारटर नं. 4/8''

''चलों आपनों टैम्पो पर बैठों । हमरा सिनी तोरों पीछू-पीछू चलै छियौं ।''

आरो एकरों बाद दोनों गाड़ी आगू-पीछू दौड़ें लागलै । सड़क नं. 8 के क्वार्टर नं. 4 के सामना जबें टैम्पो रुकलै तें दानिशें आपनों टैम्पो घुरवाय लेलकै । राशिद कुछ कहै लें चाहै छेलै, मजकि एकरों मौकाहै नै मिलें पारलै ।

''वाह, तोरा सिनी दुनिया के रक्षा करै वाला पुलिस छेकौ ।'' ड्रायवर खुश होतें बोललै ।

''ठिक्के कहलौ । कभियो-कभियो जबें इन्सानियत आवाज दै छै तें यहू सब करैलें पड़ै छै ।'' दानिशें जवाब देलकै ।

''अच्छा-अच्छा'' ड्रायवरें कुछ नहियो समझतें गर्दन हिलैतें कहलकै ।

घर पहुँचला के बाद वैं सिनी फैसल सें मिलै के कोशिश करलकै मतरकि ऊ तखनी आपनों निजी पुस्तकालय में छेलै, जैठां केकरौ जाय के इजाजत नै छेलै । जबें ओकरा पुस्तकालय सें बुलाना रहै, तबें स्वीच बोर्ड के एक स्वीच कें ऑन करी दैलें लागै छेलै । ब्रेशा स्वीच ऑन करी कें ड्रायंग रूम में जाय बैठलै ।

कुछुवे देर बाद फैसल ड्रायंग रूम में आवी उपस्थित होलै । पूछला पर तीनों राशिद के पीछा सें लैकें सबटा कहानी सुनावें लागलै । फैसल खामोश होय चुपचाप सुनतें रहलै । आखरी में वै पूछलकै, ''जे टैम्पो पर ऊ भागलों छेलै, ओकरों नम्बर कोय्यो नोट करलें छौं की नै ?''

सुनत्हैं तीनो के मुँह खुल्ला के खुल्ला रही गेलै ।

''आरो जे टैम्पो पर तोरा तीनों सवार होलों छेलै, ओकरों नम्बर ?''

आबें तीनों के नजर एकदम नीचू होय गेलों छेलै ।

फैसल नें कहलकै, ''खैर, आइन्दा खयाल राखियौ कि ई छोटों-छोटों बातो बड़ी मददगार होय छै । ऊ आदमी मैदानो में देखलों गेलों छेलै । वैं राशिद कें अगुआ करै के कोशिश करलकै, एकरा सें साफ मतलब छै कि एकरों पीछू जरूर कोय राज छै । आरो कोय महत्वपूर्ण राज छै । होना कें ई केस आबें बड़ा दिलचस्प बुझावै छै । आरो बीच में एक गिद्धो आवी गेलों छै ।''

''गिद्ध ?'' ब्रेशा आरो गजाला एक्के साथ बोली उठलै ।

''यानी कि वहें गिद्ध....चिड़ियाँ...जे एक दिन में आपनों वजन सें तीन गुणा ज्यादा माँस खाय लै छै ?'' गजाला आचरज सें पूछलकै ।

''हों, वही गिद्ध । ऊ चिड़िया के बारे में आरो की जानै छों ।''

''बहुत विस्तार सें जानै छियै । जेना कि ऊ चालीस दिन, कभी-कभी एकरौ सें ज्यादा दिन तक बिना खाना खैले जीत्तोॅ रहेॅ सकै छै । दुनियाँ में गिद्ध के चौदह, पन्द्रह किस्म के प्रजाति पैलोॅ जाय छै । कन्डोज, दक्षिणी अमेरिका के समुद्री किनारा, खास करी कें पीरू, चीली, आरो योराग्रे में ढेरी संख्या में मिलै छै । डील-डौल में ई सब्भे गिद्ध सें ज्यादा बड़ोॅ होय छै । दायां पंख सें लै कें बायां पंख तक ओकरोॅ शरीर के लम्बाई ग्यारह सें पन्द्रह फिट के बीच देखलोॅ गेलोॅ छै । ओकरोॅ माथा पर एक ठो छोटोॅ रं कलगियो होय छै । कण्डूर गिद्ध दू किसिम के होय छै, जे मरी कें माँस नै मिलला पर जीत्तोॅ जानवर आकि चिड़ियाँ पर हमला करी खाय जाय छै । यहैं तक नै, कभियो-कभियो तें ई कमजोर आदमी, बूढ़ा आरो दुधमुंहा बच्चो कें चट करी जाय छै । मतरकि सामान्य तौर पर गिद्ध कण्डूर के तुलना में छोटे होय छै जे पंख फैलैला पर पाँच सें लै कें नौ फिट तक के होय छै । नर गिद्ध मादा गिद्ध के तुलना में छोटे हाये छै आरो एकरोॅ वजन लगभग सात किलो तक के होय छै । ई किसिम के गिद्ध के गर्दन पतला आरो नंगा होय छै । गिद्ध हेने इलाका में पैलोॅ जाय छै, जहाँ गरमी आरो धूप रहेॅ । सख्त सर्दी आकि वर्षावाला इलाका में ई जीत्तोॅ नै रहेॅ पारेॅ । यहू कहलोॅ जाय छै कि गिद्ध के उमिर सौ साल तक के होय छै ।''

टन-टनन-टनन....कि तखनिये एकाएक फोन के घंटी बजी उठलै । फैसल नें हाथ बढ़ाय कें फोन उठैलकै । कुछ देर तांय बात करतें रहलै, फेनू फोन रखतें बोललै, ''हमरा अभी बाहर जाना छै गजाला । गिद्ध के संबंध में एत्तें जानकारी वास्तें तोरा दाद दै छियौं । बाकी जानकारी दुसरोॅ दिन जानवै। जाय के इजाजत दें ।''

फैसल के निकलत्हैं गजाला आरो दानिशो विदा होय गेलै । हुन्नें ब्रेशा के दिमाग आयकोॅ घटना में उलझी कें रही गेलोॅ छेलै ।

राशिद कें नीन नै आवी रहलोॅ छेलै । हेना कें ऊ कल्हे सें परेशान आरो

उलझलों होलों छेलै । कल देर रात गेला आरो पोस्टमार्टम होला के बादे ऊ अफजल रों लहाश लै कें घोंर लौटलों छेलै । तखनिये सें देखवैय्या रों तांता बंधलों होलों छेलै । आय, बस तीन घंटा पहिलें अफजल कें दफन करी देलों गेलों छेलै ।

तखनी रात के ग्यारह बजी रहलों छेलै कि एकाएक फोन रों घण्टी बजलै । वैं सोचें लागलै कि दिन भरी तें फोन के घण्टी बजत्हें रहलै । हमदर्दी जताय वाला कें ऊ धन्यवाद, धन्यवाद कहतें-कहतें थक्की गेलों छेलै । आबें ई वक्ती नै जानौ के छेकै । ऊ पलंग सें नीचें उतरलै । तभिये माय आरो बाबू के ख्याल ऐलै । दोनों बगले के कोठरी में अचेत पड़लों होलों छेलै । दोनों कें गश पर गश आवी रहलों छेलै । यही लें डाक्टरें नींद के सूई दै कें सुलाय देलें छेलै । घरों में आरो कोय छेलै नै । मुहल्ला के जनानी सिनी आखरी रस्म पूरा करी कें आपनों-आपनों घोंर लौटी गेलों छेलै । बूढ़ी मामियो ई चोट बर्दाश्त नै करें सकलें छेलै आरो बीमार होय कें बेटी कें घोंर रात के नौ बजें चल्लों गेलों छेलै ।

राशिद नें टेलीफोन के रिसीवर उठैतें बोललै, ''हैलो ।'' तें दोसरों दिश सें कोय्यो बेहद गुर्रैलों आवाज में कहलकै, ''आबें तेरों बारी छौ ।'' आरो टेलीफोन राखी देलकै ।

राशिद एक पल लेली कांपी उठलै ।

ऊ कुछ देर होने सहमलों खड़ा रहलै । आखिर दोसरों दिश के छेलै? होना कें तें ऊ एक निडर लड़का छेलै । इस्कूल में ओकरों बहादुरी के चर्चा छेलै । मतरकि कल सें लै कें आय तक कदम दर कदम पर कै घटना घटी चुकलों छेलै, यै लेली ऊ बौखलैलों होलों छेलै । तहियो ओकरों दिमाग काम करी रहलों छेलै । वैं टेलीफोन डायरेक्ट्री खोललकै । ओकरा सें पुलिस स्टेशन केरों नम्बर नोट करलकै । फेनू नम्बर डायल करी पूछलकै, ''इन्सपेक्टर साहब छै ?''

दोसरों दिश सें आवाज ऐलै, ''ई वक्ती हुनी आपनों घरों पर होतै ।''

''कृपा करी कें हुनकों घर के नम्बर हमरा बतावौ ।'' वैं नम्बर तें लिखी लेलकै, मतर सोचें लागलै कि डायल करौं कि नै करौं । मतरकि रुकलों ऊ केना रहतियै । डायल करलकै ।

दोसरों दिश कुछ देरी लें घण्टी बजतें रहलै । फेनू हुन्नें सें इन्सपेक्टर के नींदवासलों आवाज सुनाय पड़लै, ''हैलो, तोहें के ?''

''ओ हो इन्सपेक्टर साहब, हम्में राशिद छेकां । बहुत्ते लाचारी में ई वक्ती फोन करी रहलों छियौं । आपनें हमरा पहचानी लेलौ नी ? आय आपनें कै दाफी हमरों घोंर आवी चुकलों छों ।''

''मतर है तें बतावों कि ई वक्ती फोन कथी लें करलों छौ ।'' इन्सपेक्टर साहबें नरम आवाज में पूछलकै ।

''इन्सपेक्टर साहब, की बतैय्यौं । आबें हमरों जिन्दगी खतरा में छै । जबें हम्में मैदान सें वापिस आवी रहलों छेलियै....जी...नै पहिलों दाफी कल....भाई जान के कत्ल रों बाद....लहाश लै कें गाड़ी सें ऐलों छेलियै, वहाँ तक तें कोय कठिनाई नै होलै । मतरकि जबें शाम कें वापिस आवै छेलियै तें रास्ता में हमरा अगुवा करै के कोशिश करलों गेलै । आरो अभी कुछुवे देर पहिलें फोन पर कत्ल करै के धमकी देलें छै । वैं कहलकै कि आबें हमरों बारी छेकै ।

''के धमकी देलें छै ?''

''हम्में नै जानै छियै, होना कें आवाज कोय मरद रों छेलै ।''

''अगुआ करै के कोशिश कौनें करलें छेलै ?''

''ऊ आदमी लम्बा कोट पहिननें छेलै । आरो शायत ओकरों दायां हाथ गायब छेलै । ओकरों दाढ़ी कारों-कारों छेलै, साथे-साथ वैं आपनों आँखी पर कारों चश्मा लगैनें होलें छेलै । हौ तें कहों कि तीन टा भला मनुक्ख मिली गेलै, जिनके कारणें हम्में बचें पारलौं ।''

ई सुनी इन्सपेक्टर रों चिन्तित स्वर उभरलै, ''ऊ आदमी के तलाश तें हमरौ छै, खैर तोहें बेफिकिर होय कें सुती जा । हम्में अभी तुरत फोन करी दै छियै—तोरों हिफाजत वास्तें । दू सिपाही तोरों घर के बाहर तैनात करवाय दै छियौं ।''

राशिदें इन्सपेक्टर कें शुक्रिया कहलकै आरो इन्सपेक्टर के फोन राखत्हैं वहू फोन कें राखी बिस्तर पर लेटी गेलै ।

मतरकि तखनिये वैं खिड़की रों शीशा पर केकरो दस्तक के आवाज सुनलकै । चेहरा घुमाय कें देखलकै तें ओकरों आँख आश्चर्य सें फैली कें रही गेलै । एक गिद्ध खिड़की के शीशा पर चोंच मारवो करी रहलों छेलै ।

रशीद मसहरी के डंडा उठाय कें खिड़की दिश बढ़लै, मतरकि एकबैगे ओकरों गोड़ थमी गेलै । फोन पर देलों गेलों धमकी ओकरा याद आवी गेलै आरो ऊ काँपी गेलै । वैं बढ़ी कें खिड़की के जाली लगाय देलकै आरो पलंग पर आवी कें बैठी गेलै । आबें नींद ओकरों आँखी सें कोसो दूर जाय चुकलों छेलै ।

अगलो दिन ओकरों यहाँ पुछारी करै वाला के तांता बंधलों रहलै । ऊ आपनै बेहद दुखित छेलै । बाबू आरो मम्मी रों दुक्खों के ओकरा अन्दाजा छेलै । दोपहर होतें-होतें ओकरा नींद आवें लागलै । फेनू खाना खाय कें ऊ सूतै रों तैयारी करिये रहलों छेलै कि एकटा छोटों रं बच्चा ओकरों घर के दरवाजा पर आवाज दिएँ लागलै ।

ऊ दरवाजा पर पहुँचलै तें लड़कां कागज रों एक पुर्जा ओकरों हाथों में थमाय देलकै आरो बिना कुछ कहले निकली गेलै । अभी राशिद ओकरा रोक्है लें चाहै छेलै, मतर तखनी तांय तें ऊ अगला गली में मुड़ी चुकलों छेलै । वैं पुर्जा खोली कें पढ़लकै । जैमें लिखलों छेलै,

बेटा राशिद,

रमन्ना रोड के जफर मेन्शन में तुरत पहुँचों । अफजल रों कातिल रों पता लागी गेलों छै । पुलिस इन्सपेक्टर हमरों साथें छै

तोरों चाचा

अब्दुल मतीन

चिट्ठी पढ़ी कें राशिद केरों देह काँपें लागलै । गुस्सा आरो बदला लै के भावों सें ओकरों दिमाग चलें लागलै । वैं जल्दी-जल्दी पैंट आरो कमीज चढ़ाय लेलकै । साथे-साथ जेबों में कुछ टाकाहौ डालतें बाहर आवी गेलै । माय दोसरों कोठरी में कोय जनानी साथें बैठलों छेलै आरो आपनों जवान बेटा रों मौतों पर लोर बहैवो करी रहलों छेलै । बाबू शायत सुती गेलों छेलै । दोपहर में खैला रों बाद हुनी सुती जाय के अभ्यस्त छेलै ।

बाहर निकलत्हैं सड़क पर एकठो टैम्पो मिली गेलै आरो ओकरा रमन्ना रोड पहुँचै में कोय कठिनाई नै होलै ।

पहरा पर तैनात एक सिपाही राशिद कें घर सें निकलतें आरो टैम्पो पर बैठतें देखलकै, तें वैं फोन करी कें थाना रों उपनिरीक्षक कें सावधान करी देलकै आरो आपन्हौ आपनों मोटर साइकिल पर ओकरों पीछा करें

लागलै । सादा लिबास में होला के कारणें केकरौ कोय शक्को नै हुऍ सकै छेलै । करीब-करीब पन्द्रह मिनिट तांय वैं राशिद रॉ टैम्पो कें पिछुवैतें रहलै ।

रमन्ना रोड के नगीच राशिद टैम्पो सें उतरलै आरो तेजी सें जफर मेन्शन के दिश बढ़लै । सिपाहीं आपनॉ मोटर साइकिल एक दुकानी के सामनाहै में लगाय देलकै । नजदीक दुकान के बगले में कोय डॉक्टर के क्लिनिक छेलै ! वहाँ टेलीफोन कनेक्शन देखी कें वैं फोन करै के इजाजत मांगलकै आरो थाना में फोन करी, सब स्थिति सें इन्सपेक्टर कें परिचित कराय देलकै ।

संयोगे सें वही वक्ती फैसल भी थाना पहुँचलॉ होलॉ छेलै । अब्दुल मतीन वहाँ पहिलैं से मौजूद छेलै आरो इन्सपेक्टर सें तुरन्त अपराधी कें पकड़ै के अनुरोध करी रहलॉ छेलै । फैसल रॉ जवाब में अब्दुल मतीनें बतैलकै कि पिछला एक हफ्ता सें अफजल कुछ परेशान छेलै ।

हुनका सें यहौ मालूम होलै कि जे नवयुवक अधेड़ रॉ हुलिया में मारलॉ गेलॉ छै, ऊ अफजल रॉ दोस्त इनायत अली छेलै । ओकरा शायत पहिलें सें ई पता छेलै कि अफजल पर हमला हुऐ वाला छै । ऊ या तें अफजल रॉ हिफाजत करै लेली वैठां अधेड़ रॉ हुलिया बनाय कें गेलॉ छेलै, या फेनू अफजल रॉ दुश्मन बनी कें । ओकरॉ क्रिया-कलाप के जायजा लैलें वैठां पहुँचलॉ छेलै ।

''एकरॉ मतलब तें यही होलै कि अफजल आरो इनायत कें पहिलें से मालूम छेलै कि हेनॉ हमला हुऍ सकै छै ।'' फैसल नें कहलकै ।

''शायत वही आदमी राशिदो कें धमकी देलें छै ।'' इन्सपेक्टरें बतैलकै ।

''कहिया ?''

''राती, करीब-करीब बारह बजें । वही वक्ती हम्में दू सिपाही कें वहाँ तैनातो करी देलें छेलियै । जै में एकें अभी सूचना देलें छै कि राशिद जफर मेन्शन गेलॉ होलॉ छै ।''

''ओहो, ई तें बड़ा खराब होलै । राशिद कें असकल्लॉ नै निकलना छेलै । हम्में ई पहलू पर ध्याने नै देलियै । खैर, चलॉ, देर नै करॉ । हमरा सिनी कें फौरन जफर मेन्शन पहुँचना छै ।

राशिद जबें जफर मेन्शन पहुँचलै, तें ओकरा वहाँ सन्नाटा रं बुझैलै—कुछ हेने कि जेना ऊ कोठी में एक्को टा आदमी नै रहें । ओकरा डोंर होलै, लेकिन तखनिये ओकरा आपनों पितयों अब्दुल मतीन के संदेश याद ऐलै । हुनिये हमरा यहाँ बुलैलें छै । हुनी खुद चाहै छै कि हत्यारा जेना हुएँ गिरफ्तार हुएँ । राशिदें आवाज देलकै, ''चाचा जान...चाचा जान ।''

मतरकि कोय जवाब नै ऐलै ।

कुछ देर लेली वैं सोचलकै कि आबें ओकरा की करना छै । ऊ ई नतीजा पर पहुँचलै कि यहाँ तक आवी कें बेउम्मीद होय लौटवों ठीक नै । चाचा सें मिलिये कें लौटना चाही । संभव छै, हुनी कोय काम सें बाहर गेलों रहें । राशिद बुलन्द हिम्मत रों लड़का छेलै । इस्कूल में ऊ एन. सी. सी रों कमाण्डर आरो क्रिकेट के कैप्टनों रही चुकलों छेलै । वैं फेनू एक दाफी आवाज देलकै, ''चाचा जान, तोहें कहाँ पर छों ?''

एक मिनिट बादे भीतरी बरामदा केरों दोसरों किनारी सें बूट के चरचराहट उभरलै । लागलै, जेना कोय अनाड़ी आदमी जूता पिहनी कें चलतें रहें । फेनू जल्दिये एक छाया बढ़तें नजर ऐलै । ऊ छाया कोय लम्बा आदमी रों छेलै । वैं देखलकै, वैं कारों रंग के कोट पिहनी राखलें छेलै । पैंटो कारे छेलै । आँखी पर कारों रंग के चश्मा छेलै आरो चेहरा पर ग्लोबन्द लिपटलों होलों छेलै । होना कें राशिदें अन्दाजा लगैलकै कि है आदमी वही छेकै, जे कल्हे ओकरा अगुआ करै के कोशिश करलें छेलै ।

ऊ चलतें-चलतें बरामदा में आवी कें रुकी गेलै । ओकरों तेज आँख राशिद कें एकटक घूरें लागलों छेलै ।

राशिद के हाथ-पाँव फूलें लागलै । ओकरों हिम्मत जवाब दिएँ लागलों छेलै । कि डरों सें अनचोके ओकरों मूँ सें चीख निकली ऐलै । ऊ पलटी कें बाहर दिश दौड़ें लागलै, तखनिये कोय चीज ओकरों सामना में ध्‍ामाका के साथ गिरलै—जैठां ऊ अभी-अभी खाड़ों होलों छेलै । एकरे साथ राशिद के कानों में एक भयानक आवाजो गूंजी उठलै, ''आबें तोरहे बारी छौ । आबें तोहें मरबे ।''

राशिद कें बुझैलै, जेना ई आवाज जफर मेन्शन के दरवाजा सें निकली कें ओकरों कानों सें टकराय रहलों छै । भागतें-भागतें एक दाफी ऊ

गिरवो करलों छेलै आरो ओकरों गोड़ों के चप्पलो निकली गेलों छेलै, मतरकि वैं चप्पल रों फिकिर छोड़ी देलें छेलै, कैन्हें कि बरामदा में मौजूद ऊ आदमियो ओकरों पीछू-पीछू दौड़ें लागलों छेलै ।

सिपाही एक गाछ के पीछू खड़ा छेलै । वैं आपनों मोटर साइकिल जफर मेन्शन सें सौ गज दूरे राखी कें कोठी रों सामना आवी गेलों छेलै । वैं राशिद कें घबरैलों बाहर ऐतें देखलकै तें ऊ चौकन्ना होय गेलै ।

कोठी के बाहर आवी राशिदें हिन्नें-हुन्नें सवारी के तलाश करलकै । थोड़ों आगू बढ़ी डॉक्टर रों क्लिनिक लुग ओकरा एकठो टैक्सी नजर ऐलै । ऊ वहें दिश दौड़ें लागलै । टैक्सी के नगीच पहुँची कें वैं ड्रायवर सें कुछ कहलकै आरो दरवाजा खोली पिछुलका सीटों पर बैठी रहलै । ओकरों घबराहट देखी कें ड्रायवरें गाड़ी के रफ्तार एकदम तेज करी देलें छेलै ।

ठीक वहें वक्ती जफर मेन्शन केरों दरवाजा पर गिद्ध उड़तें दिखाय पड़लै । ओकरों रुख टैक्सिये तरफें छेलै । सिपाही एक टक ओकरा देखें लागलै । ओकरों देखत्हैं-देखत्हैं गिद्ध टैक्सी के ऊपर जाय बैठलों छेलै ।

कि तखनिये सिपाही कें आपनों ड्यूटी रों ख्याल ऐलों छेलै । ऊ जल्दी सें आपनों मोटर साइकिल लुग पहुँचलै । किक लगाय कें इस्टार्ट करलकै आरो टैक्सी के पीछू दौड़ी पड़लै ।

कि तभिये गोलियो चलै रों आवाज गूंजी उठलै ।

मोटर साइकिल बेकाबू होय कें सड़क के एक दिश लुढ़की गेलै । गोली सिपाही के कंधा पर लागलों छेलै । ऊ एक दिश जमीन पर जाय गिरलै । जों मेटर साइकिल एकाएक लुढ़की जैतियै तें आपनों सवारी के ऊपर गिरतियै । सौभाग्य सें मोटर साइकिल कुछ गज आगू जाय कें गिरलों छेलै । ओकरों पहिया अभियो तांय घूमी रहलों छेलै ।

राशिद आरो टैक्सी ड्रायवरें गोली चलै रों आवाज सुनलें छेलै । वैं दोनों बुझलकै कि गोली टैक्सी पर चलैलों गेलों छै । ड्रायवर के गोड़ रों दवाब एक्सलेटर पर बढ़ी गेलों छेलै । आरो एकरों साथें टैक्सी एक झटका साथें तेज रफ्तार पकड़ी लेलकै । आबें ऊ हवा सें बात करी रहलों छेलै । एकरों बावजूदो गिद्ध टैक्सी के ऊपरलका हिस्सा पर बैठलों होलों छेलै । आरो आबें आहिस्ता-आहिस्ता आपनों जग्घों सें खिसकी रहलों छेलै ।

राशिद आरो ड्रायवर गिद्ध रों मौजूदगी सें एकदम बेखबर छेलै ।

राशिद आपना आप पर झुंझलैलों जाय रहलों छेलै कि वैं घरों सें निकलै के गलतिये कैन्हें करलकै ।

कि हठाते गिद्ध उड़लै आरो विन्ड स्क्रीन के सामना आवी गेलै । वैं आपनों पंजा सें शीशा कें खुरचवो करी रहलों छेलै । आरो पंजो मारी रहलों छेलै ।

ड्रायवरें राशिद दिश मुड़ी कें कहलकै, ''तोहें संभली कें बैठों । हम्में ई गिद्ध कें अभी खत्म करी दै छियै ।''

आरो ड्रायवरें हठाते ब्रेक लगाय देलकै । टैक्सी कें एक जोरदार झटका लागलै । टायर के आवाज दूर तांय गूंजी उठलै । मतरकि गिद्ध नीचें गिरै के बदला ऊपर उड़ी गेलै । राशिदें काँपतें आवाज में कहलकै, ''हमरा डर लागी रहलों छै । ई गिद्ध बड़ी खतरनाक नजर आवै छै ।''

ड्रायवरें हंसतें-हंसतें कहलकै, ''अरे गिद्ध सें डरै छों । होना कें यहू घटना सें कम नै छेकै कि गिद्ध टैक्सी पर आवी कें बैठी रहलै ।''

ड्रायवरें टैक्सी कें इस्टार्ट करी देलकै । ई गिद्ध सामान्य गिद्ध नांखी नै बुझावै छै ।''

''फेनू की छेकै ?'' ड्रायवरें पूछलकै ।

''हम्में नै कहें पारौं ।''

ठीक वहें वक्ती कराहै वाला चीख सुनाय पड़लै ।

ड्रायवरें मूड़ी बाहर करी कें देखलकै । गिद्ध टैक्सी के ठीक ऊपर छत सें लागलों उड़ी रहलों छेलै । ड्रायवर के मूड़ी बाहर निकालत्हैं गिद्धें गोता लगैलकै आरो ओकरों पंजा ड्रायवर के बाँही सें टकरैलै । भाग्य छेलै कि तब तांय वैं आपनों मूड़ी भीतर करी चुकलों छेलै । मतरकि बाँही पर हेने बुझाय रहलों छेलै, जेना कोय वैठां मिरचाय भरी देलें रहें । इस्टियरिंग पर ओकरों हाथ कांपें लागलै आरो देखत्हैं-देखत्हैं ओकरों आँखी के आगू अंधेरा नजर आवें लागलै । वैं गाड़ी रोकी देलकै आरो एक हाथों सें चोटैलों बाँह थामी लेलकै । फेनू ओकरों माथों इस्टयरिंग सें टकरैलै । आरो ऊ सीट रों नीचें लुढ़की गेलै ।

राशिदें ओकरा आवाज देलकै, फेनू ओकरा हिलावें-डुलावें लागलै, मतरकि तब तांय तें ड्रायवर मौत के नींद सुती चुकलों छेलै । राशिद घबराय कें आपनों सीट सें सट्टी गेलै । आकरों समझ में कुछुवो नै आवी रहलों

छेलै कि आखिर ई सब होय की रहलों है ।

वैं एक दाफी फेनू गिद्ध रों आवाज सुनलकै । वैं ओकरा ड्रायवर दिश केरों दरवाजा के खुल्ला शीशा सें भीतर ऐतें देखलकै । राशिद जल्दी सें दरवाजा खोली कें बाहर निकली ऐलै आरो सड़क पर दौड़ें लागलै । सड़क के किनारी गाछ सिनी के कतार छेलै ।

कि हठाते राशिदें आपनों गर्दन पर गिद्ध रों पड़लों पंजा कें महसूस करलकै । वैं भयभीत आँखों सें पलटी कें गिद्ध कें देखै के कोशिश करलकै कि तब तांय ओकरों आँखों के आगू अंधेरा फैली गेलों छेलै । आरो ऊ वहीं सड़क पर गिरी कें ढेर बनी गेलै ।

दुए-तीन मिनट बाद वैठां एक ठो कार आवी कें रुकलै । कार के ड्रायवरें मूड़ी बाहर निकाली गिद्ध कें उड़तें हुएँ दखेलकै आरो तीन दाफी सीटी बजैलकै । गिद्ध तीर जकां उड़ते-उड़तें ओकरों दिश ऐलै आरो कार में दाखिल होय गेलै ।

गिद्ध के कार में दाखिल होत्हैं कार हवा नांखी आगू बढ़ी गेलों छेलै ।

जीप इन्सपेक्टर चलाय रहलों छेलै । फैसल, अब्दुल मतीन आरो दू सिपाहियो वैं पर सवार छेलै । जबें जफर मेन्शन के नगीच जीप रुकलै तें, सब्भे नीचें उतरी गेलै, तखनी शाम के बेरा होय रहलों छेलै । सब्भे कोठी में दाखिल होलै । फैसल सब सें आगू छेलै ।

''यहाँ तें कोय्यो नै नजर आवै छै इन्सपेक्टर साहब, की तोरा विश्वास छौं कि फोन तोरे आदमीं करलें छेलौं ।'' फैसल नें पूछलकै ।

''हों, हमरा पूरा विश्वास छै कि फोन सिपाही शर्मा रों छेलै । कोय दूसरां फोन करी कें हमरा धोखा नै देलें छै ।'' इन्सपेक्टरें पूरे विश्वास के साथ जवाब देलकै ।

''जों तोरों बात सच मानी लेलों जाय तें, सिपाही कहाँ छै ?''

मानियो ला कि ऊ सिनी यहौं सें कहीं गेलॉ होतै, मजकि सिपाही कें तें चाही कि फोनॉ पर ई बातें के खबर दौं ।''

तब तांय हुनका सिनी कें ई मालूम नै छेलै कि सिपाही जख्मी होय कें गिरलॉ होलॉ छेलै, ऊ वक्ती कुछ मुसाफिर आरो पान वालां देखलें छेलै । वैं सिनी पहिलें ओकरा डॉक्टर के क्लिनिक लै गेलॉ छेलै, मतरकि संयोगॉ सें डाक्टरो वहाँ मौजूद नै छेलै, यही लें सिपाही कें एक टैक्सी में लादी कें अस्पताल पहुँचाय ऐलॉ छेलै ।

कि तखनिये इन्सपेक्टर रॉ मोबाइल के घंटी बजलै । थाना सें फोन छेलै । ओकरा बतैलॉ गेलॉ छेलै कि सिपाही शर्मा अस्पताल में भर्ती छै । ओकरा गोली लगलॉ छै मतरकि ऊ खतरा सें बाहर छै ।

घबड़ैलॉ होलॉ इन्सपेक्टरें सब स्थिति फैसल कें बतैलकै । जफर मेन्शन रॉ एकेक कोठरी देखी लेला रॉ बाद फैसल लॉन में ऐलै । ऊ चारो दिश आँख दौड़ाय रहलॉ छेलै कि हठाते एक झाड़ी के नगीच एक चीज पर ओकरॉ नजर ठहरी गेलै । ऊ एक पांव रॉ चप्पल छेलै ।

''दोसरॉ चप्पल कैन्हें नी छै ।'' इन्सपेक्टर बड़बड़ैलै ।

''जों ई मानी लेलॉ जाय कि ई राशिद रॉ चप्पल छेकै, तें एकरा सें दू बातॉ के अन्दाजा लागै छै । एक तें यही, कि राशिद यहाँ ऐलॉ छेलै आरो तबें ओकरॉ साथें जरूर कोय दुर्घटना घटलॉ छै । संभव छै कि ओकरा जबरदस्ती यहाँ सें लै जैलॉ गेलॉ छै । तोरॉ सिपाहियो जख्मी होलॉ छौं । आवॉ, बाहर के लोगॉ सें पूछताछ करलॉ जाय ।'' फैसल नें बहुत सोच-विचार करतें कहलकै ।

बाहर निकललै तें, देखलकै कि लोग सिनी भीड़ बनाय कें ओकरॉ जीप लुग खाड़ॉ होय गेलॉ छै । पूछताछ करला पर सिपाही के साथ दुर्घटना रॉ खबर पैलकै आरो यहू मालूम होलै कि कोठी सें एक आदमी निकली कें कार सें दायां दिश गेलॉ छै । शायत वहीं गोलियो चलैनें छेलै । सिपाही के मोटर साइकिल अभी तांय सड़क रॉ किनारी लुघड़लॉ होलॉ छेलै ।

फैसल नें यहू मालूम करलकै कि जफर मैन्शन रॉ मालिक जफर साहब आपनॉ अहल्या साथें हज करैलें गेलॉ होलॉ छै । मकान में ताला बन्द छेलै, मतरकि आय कोय साहब यैमें कार समेत ऐलॉ छेलै । होना कें रात में ई मकान के हिफाजत लेली यहाँ कोय आदमियो सुतै छै ।

फैसल नें एक सिपाही रों ड्यूटी मोटर साइकिल के पास लगैलकै आरो दुसरा कें अस्पताल भेजी आपने जीपों पर बैठी गेलै । आबें ऊ दायां दिश कंकड़बाग तरफ जाय रहलों छेलै । इन्सपेक्टर आरो अब्दुल मतीनो साथें छेलै ।

''संभव छै कि राशिद घोंर लोटी गेलों रहें ।'' इन्सपेक्टरें उम्मीद जाहिर करतें कहलकै ।

''आपनों चप्पल छोड़ी कें ?'' फैसल नें व्यंग्य के स्वर में कहलकै, ''होना कें आपनों तसल्ली लें फोनो करी कें पूछी ला ।''

ई सुनी इन्सपेक्टर खामोश होय गेलै । फैसल आपनों विचारों में डुबलों रहलै । वैं सोची रहलों छेलै कि दुश्मन रों इरादा खाली डरावै-धमकावै रों नै छेलै । राती जे किसिम सें वैं फोन पर धमकी देलें छेलै, वही किसिम सें वैं दोसरो रास्ता अपनावें सकै छेलै । ओकरा जफर मैन्शन कैन्हें बुलैलों गेलै आरो एत्तें आसानी सें केना चल्लों गेलै ? राशिद कें जों परेशाने करना होतियै तें दू-चार रोज बाद ओकरा ऊ वक्ती घेरलों जैतियै, जखनी ऊ इस्कूल जैतें होतियै । निस्संदेह अपराधी जाने सें मारै के इरादा राखै छेलै । शाम के वक्ती रमन्ना रोड उपयुक्ते रहै छै । अधिकांश लोग तें घरे में रहै छै आकि फेनू बिजनेस के गरज सें मुहल्ला सें बाहरे रहै छै, आकि फेनू क्लब जाय चुकलों रहै छै । यहू नै तें सिनेमा हॉलों में बैठी कें वक्त गुजारतें रहै छै ।

जीप जबें आगू कुछ दूर निकली ऐलै तें, फैसल नें एक ठियां सड़क के किनारी भीड़ देखलकै, जे दू जग्धा पर छेलै । पुलिस रों लोग भीड़ कें हटावै में लागलों होलों छेलै । जीप देखत्हैं एक उपनिरीक्षक जीप के करीब आवी गेलै । फैसल आरो इन्सपेक्टर कें देखत्हैं सैल्यूट मारलकै ।

इन्सपेक्टर रों जीप देखत्हैं आरो हुनका सिनी कें उतरतें देखी कें भीड़ भोरकों अन्हार नाँखी छंटें लागलै । सिपाही कें सैल्यूट मारतें भीड़ समझी गेलों छेलै कि कोय बड़ों पुलिस अफसर पहुँची गेलों छै ।

''यहाँ की होलों छै ?'' फैसल नें पूछलकै ।

''हुजूर, यैठां दू लहाश पड़लों होलों छै । एक टैक्सी ड्रायवर रों आरो दूसरों एक लड़का केरों छेकै ।''

''लड़का केरों ?'' फैसल नें चौकी कें पूछलकै ।

''जी हों, हुन्नें सड़क के किनारी लड़का रों लहाश छै ।''

फैसल तेजी सें आगू बढ़लै । वैं लहाश कें एकदम करीब सें जाय कें देखलकै तें राशिदे छेलै ।

''आखिर दुश्मनें धमकी पूरा करी देलकै ।'' इन्सपेक्टर बोली पड़लै ।

''मजकि अभियो एकरों बदन में गर्मी बाकी छै । रुकी-रुकी कें सांसो आवी रहलों छै । जल्दी करों, एकरा उठावों आरो अस्पताल लै चलों ।'' फैसल नें कहलकै आरो जीप दिश बढ़लै । ड्रायवर पहिलें जीप पर बैठी चुकलों छेलै ।

रास्ता में फैसल नें राशिद रों तलाशी लेलकै । कुछ रुपया के अतिरिक्त ऊ पुर्जो मिललै, जैमें जफर मेन्शन तक आवै रों संकेत छेलै । फैसल नें देखलकै कि राशिद के कंधा पर गिद्ध रों पंजा के निशान छेलै आरो तीन सुराखो । वहें रं बीच वाला सुराख बहुत गहरा छेलै ।

''ड्रायवरो केरों बाँही पर पंजा रों होने निशान छै ।'' एक सब इन्सपेक्टरें बतैलकै, जे राशिद के देह कें संभालले होलों छेलै ।

फैसल नें अब्दुल मतीन दिश होय कें कहलकै, ''ई पूर्जा देखों ! की ई पुर्जा तोरों हाथ के लिखलों छेकै ?''

अब्दुल मतीन आँख फाड़लें लिखावट कें देखलें जाय रहलों छेलै । फेनू थूक निगलतें ऊ बोललै, ''ई हमरों लिखलों नै छेकै । हमें राशिद कें जफर मेन्शन नै बुलैलें छेलियै । हम्में तें थाना रों इन्सपेक्टर साहब रों पास छेलियै । तोहूं हमरा देखलें छौ । जों हम्में ई पुर्जा लिखी कें राशिद कें बुलैलें होतियै तें, जफर मेन्शन में होतियै । तोरा सिनी के पास नै होतियै ।''

''ई दलील कमजोर लागै छै । हम्में पूछै छियौं कि तखनिये थाना में कैन्हें छेलौ ? आरो हमरे साथ-साथ कैन्हें घूमी रहलों छौ ? की ई किसिम सें तोहें आपनों निरपराध होय के सबूत नै राखै लें चाही रहलों छौ ? राशिद रों हत्या तोहें आरो केकरों जिम्मा में लगैलें होभौ । बेचारा ड्रायवर तें मुफ्ते में मारलों गेलै ।''

''तोहें हमरा कसम खिलाय लें । हम्में बेगुनाह छी । तोरा शायत मालूम नै छौं कि रिश्ता में हम्में राशिद रों चाचा लागै छी । ई हमरों बेटा छेकै । हम्में भला एकरा केना कत्ल करावें पारौं ।''

''हम्में तोरा पर इल्जाम नै लगाय रहला छियौं '' फैसल नें कहलकै, ''बलुक आपनों शक जाहिर करी रहलों छियौं । कोय्यो शक करें सकै छै । होना कें दुश्मन जे कोय्यो छेकै, वैं बड़ी होशियारी सें काम करलें छै । तोरों दिश सें चिट्ठी लिखी कें राशिद कें जफर मेन्शन बुलवैलकै आरो ओकरों हत्या करे के कोशिश करलकै । कत्तें दुख रों बात छेकै कि पहिलें तें अफजल रों हत्या करलों गेलै, फेनू इनायत अली के खून होलै आरो आबें टैक्सी ड्रायवरो कें मारी देलों गेलों छै । ई सब्भे अपराध एक्के आदमी करलें छै । राशिदो कें वहीं मृतप्राय करी देलें छै ।''

अस्पताल आवी चुकलों छेलै । राशिद कें इमर्जेन्सी वार्ड में भर्ती करैलों गेलै आरो जत्तें डाक्टर ड्यूटी पर मौजूद छेलै, सब्भे कें ओकरों देखभाल में लगाय देलों गेलै । सिपाही शर्मों सें जाय कें फैसल आरो इन्सपेक्टर मिललै आरो ओकरा हिम्मत बंधैलकै ।

वापसी वक्ती फैसल नें इन्सपेक्टर सें कहलकै, ''अब्दुल मतीन साहब सें कही दौ कि यही वक्ती सें हुनी आपना कें हिरासत में समझौ । मतरकि जेलों में नै रहतै, बलुक आपनों घरे पर रहतै । अभी हुनका जावें दौ आरो हुनका ई जिम्मा लगावौ कि राशिद के घरवाला कें खबर करौ ।''

घोंर पहुँची कें फैसल नें जीप वापिस करी देलकै । ड्रायंग रूम में जेन्है गोड़ राखलकै कि देखलकै—ब्रेशा, गजाला, दानिश आरो फराज ओकरों इन्तजारी में बैठलों छै । फैसल नें फराज कें देखतें कहलकै, ''ओहो, तें आपनें अवतार लै लेलियै । परसुए सें युनीवर्सिटी कैम्पस सें हेनों गायब होला, जेना गधा के माथा सें सिंघ । हम्में नै जानै छेलां कि तोहें एत्तें डरपोक किसिम के लोग सचमुचे में छों ।''

''जी, बात ई छेलै कि.....''

''सफाई दै के जरूरत नै छै । तोहें दानिश के दोस्ते नी छेका... अच्छा ई सब हटावों....हों तें ब्रेशा, की होय रहलों छै ?'' फैसल नें बात

काटतें कहलकै ।

''बस तोरे इन्तजार होय रहलों छै ।''

''बस इन्तजारे, की कुछ कामो ?''

''तोरों देलों काम पूरा करी चुकलों छी; पोस्टमार्टम रिपोर्टो लें मानलें छियै । साथे साथ यहू मालूम करी ऐलों छियै कि अफजल रों साथ जे लहाश पैलों गेलों छै, ऊ ओकरों दोस्त इनायत अली के छेकै ।''

''शाबास, तोहें तें एकदम सच-सच काम करलें छों । इनायत अली के बारे में हमरौ मालूम होय चुकलों छै, आरो अभी कुछुवे देर पहिलें राशिदो पर प्राणघातक हमला होलों छै । एक टैक्सी ड्रायवरो मारलों गेलों छै ।

''मतरकि है सब केना आरो कैन्हें होलै ?''

''बतावै छियौं । पहिलें पोस्टमार्टम रिपोर्ट तें लानों ।''

ब्रेशां तुरत रिपोर्ट प्रस्तुत करी देलकै, जेकरा पर नजर डालतें फैसल नें कहलकै, ''हमरों शक एकदम सही निकललै । दोनों मौत जहरे देला सें होलों छै । आयकों घटना यहें कहानी कहै छै ।''

''है बीच में जहर कहाँ सें आवी गेलै, जबें कि अब तांय गोलिये चलतें रहलों छै ।''

''यही तें रहस्य छेकै, जेकरों दिश केकरो नजर नै गेलों छै । मौत रों असली कारण गिद्धे छेकै ।''

''गिद्ध ?'' ई सब सुनी सब्भे हैरान होय रहलों छेलै ।

''हों गिद्ध । ई काम लेली जोंन गिद्ध के इस्तमाल करलों गेलों छै, ओकरा खास तौर पर ई ट्रेनिंग देलों गेलों छै कि कबें आरो केकरा पर हमला करना छै । एकरों वास्तें ओकरों पंजा में जहर लगाय देलों जाय छै । ई जहर है कदर तेज असर करै छै कि आदमी के खून में जैत्हैं, सौंसे देहों में बिजलिये नाँखी दौड़ें लागै छै आरो देखत्हैं-देखत्हैं ऊ आदमी रों मौत होय जाय छै ।

''तें राशिद केना बची गेलै ?''

''भगवान के लीला कही ला । यहू संभव छै कि ड्रायवर पर हमला करै वकती ओकरों पंजा रों जहर छूटी गेलों रहें । निश्चित रूपों सें कहलों जावें सकै छें कि राशिद पर हमला बाद में होलों छै ।

''आश्चर्यजनक, की है संभव छै ?'' फराज बोललै ।

''आयकों तेज रफ्तार रों जिन्दगी में कुछुवो असंभव नै छै । फेनू ई सब तें हमरों आँखी रों सामना में घटी रहलों छै । हों तें गजाला, हम्में तोरा सें गिद्ध रों बारे में आरो विशेष बात जानै लें चाहवै । परसू जे कुछ बतैलें छेलौ, वैंसें ई केस में हमरा फायदा पहुँची रहलों छै ।''

''आरो की बतैय्यौं । गजालां इन्कार में मूड़ी हिलैलकै ।

''जे कुछु आरो जानतें रहों, कही दा । हुएँ पारें तोरों नजरी में ऊ बात खास नै रहें, मजकि हम्में वही सें कोय महत्वपूर्ण सुराग निकाली लौं ।''

ई सुनी दानिश कहलकै, ''गिद्ध के बारे में हमरों अध्ययन सही छै । सुनों, मादा गिद्ध एक दाफी में बस एक्के अण्डा दै छै । ई सामान्यतः सफेद आकि मटिया रंगों के होय छै । अधिकांश किस्म में बयालिस सें लै कें एक सौ बीस दिन तांय अण्डा सेला के बाद बच्चा निकली आवै छै । बच्चा सिनी के भरण-पोषण के भार नर गिद्धे पर रहै छै आरो नर गिद्ध जबें खाना जुटाय दै छै तें, मादा गिद्ध बड़ा चाव सें दाना कें बच्चा सिनी के मुंहों में डालै छै । तेज उड़ै वाला चिड़िया के खास ठिकानों होय छै । उड़ै सें पहिलें ई मुर्ग नाँखी पंख फड़फड़ावै छै, मतरकि बहुत ऊँचा तांय नै उड़ें सकै छै । प्रायः ई समझलों जाय छै कि गिद्ध खाली माँसे पर जीवन निर्वाह करै छै, मजकि है सोचवों गलत छेकै । यूरोप के कुछ हिस्सा में गिद्ध रों कुछ हेनो किस्म पैलों जाय छै, जेकरा पामण्ट कहलों जाय छै । ई गिद्ध माँस एकदम नै खाय छै । आरो हरा अखरोट आकि हेने दोसरों किस्म के सुखलों फलों सें जीवन गुजर करै छै । कुछ गिद्ध माँस साथें छोटों-छोटों मछलियो, समुद्री कीड़ा-मकौड़ा, यहाँ तक कि गन्दगियो खाय छै । कोय तें जानवर रों सीना आकि खोपड़ी छोड़ी कें बाकी हड्डियो तक तोड़ी कें ओकरों भीतर के गूदा निकाली कें खाय जाय छै । चिड़ियां में गिद्ध सबसें ज्यादा तेजी सें माँस खाय वाला जीव छेकै । एक दाफी बाइस गिद्ध मिली कें बस साढ़े तीन घण्टा में एक भैंस के सब्भे माँस कें खाय गेलै । हेने एक घटना आरो छै कि दस गिद्ध मिली कें भेड़ के एक बच्चा के माँस खाय में सिर्फ एक मिनिट लगैलें छेलै । उड़ान के वक्ती ई बहुत खामोश रहै छै, जबें कि माँस खाय वक्ती ई खुशी सें चीखतें रहै छै । गिद्ध रों नजर बहुत तेज होय छै आरो ई कै सौ फिट रों उँचाइयो पर उड़तें रहला के बादो धरती पर आपनों शिकार देखी लै छै । एक बात आरो कि गिद्ध में धैर्य धरै के साहस बड्डी होय छै ।

कभियो-कभियो ई कै-कै दिन तांय आपनों शिकार के मरै के इन्तजार करतें रहै छै । हौ दिनों में ऊ आपनों चोंच के पंख में दबैलें ऊँघतें रहै छै । बस बीचों बीचों में नजर उठाय कें जानवर कें देखी लै छै । ताजा मरी कें तुलना में धूप सें सड़लों-गललों माँस कें यैं ज्यादा पसंद करै छै । यहू जानी ला कि गिद्ध में सूंघै रों शक्ति बहुत्ते कम होय छै ।''

अभी दानिश शायत आरो कुछ बोलतियै कि तखनिये एक सिपाही के आवै के खबर मिललै । फैसल नें ओकरा ड्रायंग रूमे बुलाय लेलकै आरो पूछलकै, ''की बात छेकै ?''

''हुजूर, आपनें रों फोन काम नै करी रहलों छै, यही लें इन्सपेक्टर साहबें हमरा फोन करलकै कि हुनकों पास एक ठो आदमी ऐलों होलों छै, जेकरा लै कें इन्सपेक्टर साहब आपनें रों पास आवै लें चाहै छै । जों आपनें कहों तें, हुनी तुरत्ते लै कें आवी जाय ।''

''जा, इन्सपेक्टर साहब सें कही दौ कि हौ आदमी कें लै कें आवी जाय ।''

सिपाही के जैत्हैं फैसल नें कहलकै, ''दानिश हमरा सिनी कें बीचे में रुकी जाय लें पड़ै छै, मतर एतना बात जरूर छै कि गिद्ध के बारे में तोरों आरो गजाला के जानकारी बेशक विस्तृत छै, आरो जत्तें जानकारी तोरा दोनों देलें छौ, वै लें धन्यवाद । वास्तव में ई बार के में केस गिद्ध सें शुरू होय छै । कोय आदमी गिद्ध सें काम लै कें फोन करलें जाय रहलों छै—सचमुच में केस बड़ी पेचीदा आरो उलझलों होलों छै । अपराधी आँखी के सामना में दिलेरी सें आपनों काम करलें जाय रहलों छै, आरो हमरा सिनी ओकरों बारे में अभी तांय कुछुवो नै जानै छियै । यहू नै जानें पारलियै कि आखिर खून कैन्हें होय रहलों छै ।''

''बेशक ई दाफी तोहें बड़ी कठिनाई महसूस करी रहलों छौ ।'' गजाला बोललै ।

''नै, कठिनाई रों बात नै छेकै । आय न कल अपराधी कें गिरफ्तार तें होनै छै । जुर्म करी कें कोय बचै नै पारें । हम्में तें बस एतनै चाहै छी कि बस आबें आरो केकरो खून नै हुऍ । आदमी रों जिन्दगी एतना सस्ता नै होय छै कि जबें कोय चाहें, खतम करी दें ।

''हमरों जिम्मा कोय काम हुऍ तें बतावों ।'' दानिश बोललै ।

''अभी नै, धन्यवाद । हम्में खुद्दे हर चीजों पर नजर राखलें होलों छियै । अभी तांय तोरों सिनी के जरूरत नै महसूस करी रहलों छियौं । बाद में कष्ट जरूरे देभौं ।''

कि तखनिये इन्सपेक्टर एक आदमी साथें आवी पहुँचलै । वैं ऊ तीस-बत्तीस साल युवक सें परिचित करवैलकै, ''हिनी अनीसाबाद कॉलोनी सें ऐलों है । हिनकों नाम युसुफ छेकै । बड़ी घबरैलों होलों है ।''

''कैन्हें ?'' फैसल नें पूछलकै ।

''हिनकों पास एक ठो चिट्ठी है ।''

''केन्हों चिट्ठी ?''

''आपन्हैं देखी ला नी ।'' इन्सपेक्टरें युसुफ सें चिट्ठी लै कें फैसल दिश बढ़ाय देलकै । फैसल नें चिट्ठी खोली कें पढ़ना शुरू करलकै । वै में लिखलों छेलै—''अफजल रों बाद आबें तोरो बारी छौ । ओकरों एक दोस्त इनायत अली खतम करी देलों गेलै, तहूँ ओकरों दोस्त छेकैं, आबें तोरे बारी छौ । आरो तोरों बारी कैन्हें ऐलों है, तोहें आपन्है जानें सकै छैं । तोरों मौत निश्चित छौ । तोरा कोय्यो नै बचावें पारें ।''

चिट्ठी पढ़ी कें फैसल नें युसुफ सें पूछलकै, ''की तोहें बतावें पारै छों कि अपराधी कोंन घटना कें याद करै के संकेत करलें है ?''

''नै, हम्में कुछ नै जानै छियै । हम्में कोय हेनों काम नै करलें छियै । हम्में अफजल रों दोस्त जरूरे छेलियै, मतरकि अफजल नाँखी हमरों जिन्दगी बेदाग रहलों है । नैं जानौं, ई अपराधी की चाहै है । आबें हमरा धमकी दै रहलों है ।''

''की तोर्हौ क्रिकेट सें दिलचस्पी छौं ?''

''कभियो दिलचस्पी छेलै । पिछलका दू, ढाई साल सें मतर आबें कहाँ खेलै छियै ।''

''कैन्हें ?''

''हमरों आँखे कमजोर होय गेलों है ।''

''अनीसावाद कॉलोनी में तोहें कहाँ रहै छों ?''

''रोड नं. दस, क्वार्टर न. अठारह में ।''

''अच्छा तें तोहें जा, हम्में तोरों हिफाजत के इन्तजाम करवाय छियौं ।''

युसुफ धन्यवाद कही कें जेन्है निकललै, फैसल नें दानिश आरो फराज सें कहलकै, ''तोरा दोनों हिनकों पीछू-पीछू जा, हिनकों हिफाजत होना बहुत्ते जरूरी छै ।''

आरो दोनो के निकलना छेलै कि फैसल नें इन्सपेक्टर सें कहलकै, ''तोहें फौरन दू सब इन्सपेक्टर कें युसुफ के घरों पर तैनात करवाय दौ । ओकरों मौत हमरों सबसें बड़ों हार होतै । हम्में नै चाहै छियै कि बिना कारणे बेचारा के खून होय जाय ।''

सब बात सुनी कें जबें इन्सपेक्टरो चल्लों गेलै तें वैं गजाला सें कहलकै, ''आबें तोहें घर जा । हमरा अभी ढेर सिनी काम कें निपटाना छै ।''

गजाला चल्लों गेलै तें फैसल नें ब्रेशा सें कहलकै, ''ई केस में तोहें कोय खास काम नै करलों छै—खाली आपनों दोस्त साथें गप हाँकै के । अच्छा, आबें उठों आरो जल्दी सें तैयार हो जा । हमरा अभिये अनीसाबाद कॉलोनी जाय लें पड़तै । रिवाल्वर राखी ला ।''

''अनीसाबाद कॉलोनी कैन्हें ?'' ब्रेशां चकित होतें पूछलकै ।

''यै लें कि आयकों रात युसुफ पर हमला जरूरे होतै । हत्यारा जबें राशिद कें धमकी देलें छेलै तें वहू रात में हमला होलों छेलै । हमरा पूरा विश्वास है कि आयकों रात युसुफ पर जरूरे हमला होतै आरो हम्में अपराधी कें देखै लें चाहै छियै आरो खुद ओकरा पर हमलौ करै लें चाहै छियै हेनों मौका फेनू हाथ नै आवै वाला छै । दानिश आरो फराज के आँखी में ऊ धूल झोंकें सकै छै, कोय शक नै कि अपराधी बड़ी शातिर छै ।''

फैसल नें आपनों कार निकाली लेलकै आरो आपन्हें सें हाँकें लागलै। ब्रेशा अगुलका सीटों पर बैठलों छेलै ।

जबें ऊ दोनों अनीसाबाद के सड़क नं. दस पर पहुँचलै आरो क्वार्टर नं. अठारह के सामना सें गाड़ी आगू बढ़लै तें, फैसल नें महसूस करलकै कि वहाँ जरूरत सें ज्यादा सन्नाटा छै । वैं आगू जाय कें पीपल गाछी के नीचें गाड़ी खड़ा करी देलकै । आरो टहलतें होलें पैदले युसुफ रों क्वार्टर दिश लौटी पड़लै ।

फैसल नें देखलकै, तखनिये क्वार्टर नें अठारह के सामना एक टैम्पो आवी कें रुकलै । यहू देखलकै कि वैसें युसुफ उतरलै आरो टैम्पो वाला कें

किराया दै कें गेट के भीतर मुड़ी गेलै ।

टैम्पो वापिस जाय चुकलोॅ छेलै । फैसल तेजी सें आगू बढ़ले छेलै कि सामना सें कोय गाड़ी के हेड लाइट चमकी उठलै । गाड़ी तेजी सें आवी रहलोॅ छेलै । ऊ सड़क के किनारी होय गेलै । गाड़ी ओकरोॅ नगीच आवी कें रुकी गेलै । अफजल नें देखलकै—ओकरा सें दानिश आरो फराज उतरी रहलोॅ दै । बड़ी तेजी में दानिश नें ड्रायवर के किराया थमैलकै आरो गाड़ी कें विदा करी देलकै । फेनू फैसल के नगीच होतें आश्चर्य सें पूछलकै, ''तोहें यहाँ ?''

''हों, हम्मू स्थिति कें जांचै-परखै लें यहाँ तक आवी गेलोॅ छियै । आरो ब्रेशा के मशविरा के मुताबिक हम्में क्वार्टर में दाखिल होय के कोशिश करवै ।'' फैसल नें जवाब देलकै ।

दोनों के गेला रोॅ बाद फैसल आगू बढ़लै । ऊ अभी क्वार्टर रोॅ गेट के नगीच पहुँचले छेलै कि वैं गिद्ध रोॅ आवाज सुनलकै । नजर उठैलकै तें देखलकै कि छत्तोॅ पर बैठलोॅ एक गिद्ध ओकरै घुरी रहलोॅ छै । गिद्ध पर आँख गड़ैलै ऊ गेट के भीतर दाखिल होय गेलै । सामना के कोठरी में ओकरा कोय्यो नजर नै ऐलै । मतरकि भीतर के कोठरी में कुछ खटपट होय रहलोॅ छेलै । ऊ सोचें लागलै कि अन्दर जावं की नै जावं । कि तभिये केकरो चलै के आहट सुनाय पड़लै । भीतर सें कोय बाहर दिश आवी रहलोॅ छेलै । फैसल नें हिन्नें-हुन्नें देखलकै । देखलकै कि बरण्डा के किनारी सें लागलोॅ एक चौकी खड़ा छै । ऊ ओकरे पीछू छुपी गेलै ।

भीतर सें जे आदमी बाहर निकललोॅ छेलै, वैं लम्बा कोट पहनलें होलोॅ छेलै । कोट केरोॅ रंग कारोॅ छेलै । पैण्टो वहें रंग के छेलै । आँखोॅ पर चश्मा चढ़लोॅ होलोॅ छेलै । दायां हाथ के आस्तिन झूली रहलोॅ छेलै ।

देखतैं-देखतैं ऊ आदमी गेट सें बाहर निकली गेलोॅ छेलै आरो आहिस्ता-आहिस्ता सीटी बजावें लागलोॅ छेलै । तीसरोॅ सीटी पर गिद्धें एक करैहलोॅ रं आवाज निकाललकै आरो ओकरोॅ कंधा पर आवी कें बैठी गेलै ।

फैसल के दिमाग बड़ी तेजी सें काम करें लागलोॅ छेलै । ऊ चौकी के पीछू सें निकली कें तेजी सें गेट दिश बढ़लै । ओकरोॅ दायां हाथ में रिवाल्वर छेलै ।

ऊ आदमी तेजी सें आगू बढ़लोॅ छेलै आरो सड़क नं. नौ दिश बढ़ी

गेलों छेलै । फैसल नें देखलकै, कि ऊ एक कार में सवार होय रहलों छै । आपनों कार तक पहुँचै के वक्त ओकरों पास नै छेलै । ऊ तेज-तेज कदम बढ़ाय कें कार के करीब पहुँचै लें चाहै छेलै, मतरकि कार इस्टार्ट होय चुकलों छेलै । वैं दायां हाथ आगू करी कें कार के पिछुलका टायर पर निशाना साधलकै आरो गोली चलाय देलकै । कार लड़खैलै आरो ठाड़ों होय गेलै । ऊ आदमीं खिड़की सें माथों बाहर निकाली कें फैसल दिश देखलकै । फेनू ओकरों एक हाथ खिड़की सें बाहर किनललै आरो छलांग मारी कें आपनों जग्घा सें हटी गेलै । कि तखनिये सड़कों पर बम फटलै, जेकरा धुआँ एकदम घन्नों छेलै ।

फैसल आबें कार दिश दौड़ी रहलों छेलै । गिद्ध ऊ आदमी के कंधा पर अभियो तांय बैठलों होलों छेलै । फैसल जोंन तेजी सें दौड़ी रहलों छेलै, ओकरा सें बेसिये आगू वाला भागलों जाय रहलों छेलै । फैसल नें अन्दाजा लगैलकै कि यै किसिम सें ऊ आदमी कोय मोड़ पर घुमी कें नजर सें गायब हुऍ पारें । छुपें पारें । वैं आपनों रफ्तार कम करी देलकै आरो एक बार फेनू हाथ आगू करी गोली चलाय देलकै । गोली लगै भर के देर छेलै कि ऊ आदमी मुँह के बल जमीन पर गिरी पड़लै । ई देखी फैसल फेनू दौड़ें लागलै । घायल आदमी उठै के कोशिश करी रहलों छेलै । तखनी गिद्ध ओकरों माथों के ऊपर उड़ी रहलों छेलै ।

जबें फैसल ऊ आदमी के नगीच पहुँचलै, तखनी ऊ आपनों एक टांग पकड़लें घिसटी रहलों छेलै ।

''आबें तोरों कोय्यो कोशिश व्यर्थ होतौं । एक तें पहिलैं सें तोरा एक हाथ नै छौं । इखनी एक टांगो घायल होय चुकलों छौं आरो हमरों रिवाल्वर में इखनियो चार गोली बचलों होलों छै । तोरों दुसरों हाथ आरो दुसरों टांग घायल कखनियो करें सकै छी ।'' फैसल ओकरों एकदम नगीच पहुँचतें कहलकै ।

बम के धमाका आरो गोली के आवाज के कारण आसपास के क्वार्टर सिनी के खिड़की सब खुलें लागलों छेलै । फैसल नें आवाज दै कें कुछ लोगों कें बुलैलकै । जबें चार-पाँच लोग आवी गेलै तें वैं पुछलकै, ''तोरा सिनी में से केकरों पास मोबाइल छौं ? हमरों मोबाइल यहीं कहीं गिरी चुकलों छै । नै तें क्वार्टर में जाय कें फोने सें पुलिस इस्टेशन खबर करी दौ

कि फैसल नें इन्सपेक्टर कें तुरत बुलैलें छै । सड़क नं. नौ पर खाड़ोॅ छै ।''

''तोहें, तोहें, यानी कि जासूस फैसल....? कुछ लोगोॅ के मुँहोॅ सें हठाते आवाज निकललै आरो वैं सिनी आचरज सें ओकरोॅ दिश देखेॅ लागलै । एक आदमी आपनोॅ क्वार्टर दिश दौड़लोॅ गेलै, ताकि जल्दी सें जल्दी थाना खबर करेॅ सकें ।

''जों कष्ट नै हुऔं तें तोरा सिनी कें एकटा तकलीफ दै लें चाहै छी । ई आदमी खूनी अपराधी छेकै । यैं अब तांय पाँच, छोॅ खून करी चुकलोॅ छै । बड़ी मुश्किल सें गिरफ्तार हुऍ पारलोॅ छै । हम्में कुछ देर लेली एकरा तोरा सिनी लुग छोड़ै लें चाहै छी । सड़क नं. दस में यैं कोय दुर्घटना करलें छै । हमरोॅ कुछ आदमी वहीं छै । हम्में सड़क नं. दस पर जाय लें चाहै छियै । तोरा सिनी तब तांय एकरोॅ निगरानी करतें रहियौ । ई भागें नै पारें ।''

''केन्हों कें नै भागें पारतै, हमरा सिनी एकरा घेरलें राखवै ।'' तीन चार आदमी आगू बढ़तें जोशीला आवाजोॅ में बोललै आरो घेरा बनाय कें खाड़ोॅ होय गेलै ।

''होना कें सावधानी लें हम्में एकरा बेहोशी के सूय्यो लगाय दै छियै ।'' फैसल नें आगू बढ़ी कें रिवाल्वर रोॅ दस्ता ओकरोॅ माथोॅ सें सटाय देलकै आरो देखत्हैं-देखत्हैं ऊ आदमी के माथोॅ लुढ़की गेलै । ऊ बेहोश होय चुकलोॅ छेलै ।

फैसल ओकरोॅ अचेत होलोॅ शरीर कें कुछ देर लें देखतें रहलै आरो कुछु सोचतैं रहलै, तबें बोललै, ''तोरा सिनी में सें दू आदमी कें तकलीफ देभौं। हम्में एकरा यहाँ नै छोड़ै लें चाहै छियै । हमरोॅ मदद करोॅ आरो एकरा सड़क नं. दस तक लै चलोॅ । जों ऐ बीचोॅ में पुलिस आवी जाय तें ओकरा सड़क नं. दस पर भेजी दियौ । रास्ता में हमरोॅ मोबाइलो देखतें जइयोॅ । शायत कहीं गिरलोॅ पड़लोॅ रहें ।''

एक नौजवानें ऊ बेहोश होलोॅ आदमी कें आपनोॅ कंधा पर लादी लेलकै । दुसरोॅ ओकरा सहारा देलें होलें छेलै । ढेरे लोगो ऊ दोनों के साथ होय गेलै । सब्भे सड़क नं. दस के दिश चल्लोॅ जाय रहलोॅ छेलै ।

रास्ता में फैसल नें फेनू वहें गिद्ध रोॅ आवाज सुनलकै । ऊ सड़क नं. एक पर लगातार चीखी रहलोॅ छेलै । जेना आपनोॅ मालिक कें ढूंढतें रहें

सड़क नं. दस के क्वार्टर सिनी के आगू भीड़ इकट्ठा होय गेलों छेलै । फैसल पर नजर पड़त्हैं ब्रेशा ओकरों नगीच आवी गेलै ।

''युसुफ भी मरी चुकलों छै'' वैं बतैलकै, ''हम्में गोली आरो बम के आवाज सुनी कें हिन्नें ऐलों छेलियै । हमरों साथें दानिश आरो फराज भी छेलै । यहाँ केकरौ नै पावी कें हम्में सिनी क्वार्टर के भीतर चल्लों गेलियै तें देखलियै—ड्रायंग रूम खाली पड़लों छै । ओकरों आगू के कोठरी के दरवाजा खुल्ला होलों छेलै । वैमें गेलियै तें देखलियै—युसुफ मरलों पड़लों छै । रसोयघर में युसुफ केरों पत्नी ओकरों दोनों बच्चा बंधलों पड़लों छै । हमरों पूछला पर युसुफ केरी पत्नी बतैलकै कि साँझे साँझ एक आदमी ऐलों छेलै । बात करतें-करतें ऊ जबर्दस्ती भीतर घुसी गेलै । पहलें तें वैं ओकरा पकड़ी कें बांधी देलकै, फेनू बच्चा दोनों कें बांधी कें रोसय घर में डाली देलकै आरो ओकरों बादकों खबर ओकरा मालूम नै छै ।''

ब्रेशां फैसल कें बड़ी परेशानी सें देखतें कहलकै, ''हमरा सिनी तोरा लें परेशान छेलां । आखिर तोहें कहाँ छेलौ ?''

''हत्यारा कें गिरफ्तार करै लें गेलों छेलियै ।''

''की गिरफ्तार होय गेलै ?''

''हों, हौ देखों, बेहोश पड़लों होलों छै ।''

सब्भे बेहोश होलों अपराधी कें देखें लागलै ।

''हम्में एकरा पहचानी रहलों छियै ।'' दानिश बोललै, ''शायत चिड़ियाघर के कर्मचारी छेकै ।''

''ओहो'' फैसल रों आँख हठात सोच में डूबी गेलै ।

ठीक वही वक्ती पुलिस रों गाड़ी सिनी के आवाज सुनाय पड़लै । इन्सपेक्टर दर्जन भर सिपाही लै कें पहुँची गेलों छेलै ।

फैसल के सामना होत्हैं कहलकै, ''फोन मिलत्हैं हम्में चललों आवी रहलों छियै ।''

''ठीक छै, ई रहलौं तोरों मुजरिम । पहिलें एकरों हाथों में हथकड़ी डालों ।''

''मतरकि है छेकै के ?''

''अभी मालूम होय जैतौं । एकरा होश में आनै के कोशिश करों । ब्रेशा, ई काम तोहीं करों । हम्में युसुफ के लहाश देखी कें आवै छियौं ।

इन्सपेक्टर, तहूँ हमरों साथ आवों, मजकि यै सें पहिलें दू सिपाही कें सड़क नं. नौ के दिश भेजों । रास्ता में कहीं हमरों मोबाइल गिरलों छै । मुजरिम रों पीछा करतें शायत जेब सें निकली गेलै । सड़क रों दोनों दिश देखतें जाय लें कहौ ।''

दू के बदला चार सिपाही कें इन्सपेक्टर नें निर्देश देलकै । दानिश आरो फराजो ओकरों साथ गेलै । कॉलोनी के कुछ नौजवानो साथ होय गेलै ।

''की युसुफ सचमुचे में मरी गेलै ?'' इन्सपेक्टर नें आश्चर्य भरलों आवाज में फैसल सें पूछलकै ।

''हों, ओकरों खून होय गेलै आरो हत्यारा यहें आदमी छेकै ।'' एतना कही फैसल नें विस्तार सें सब कहानी बतैलकै ।

युसुफ केरों लहाश चित्त पड़लों होलों छेलै । ओकरों आँख आचरज आरो डर भरलों होलों छेलै । ओकरा गला घोंटी कें मारलों गेलों छेलै । हौ वही लिबास में छेलै, जोंन लिबास में ऊ फैसल आरो इन्सपेक्टर सें मिललों छेलै ।

बाहर बेहोश पड़लों अपराधी कें आबें होश आवी गेलों छेलै । आरो माथों झुकाय कें उठी बैठलों छेलै । दोनों ओकरों नगीच लौटी ऐलै ।

''तोरों नाम की छेकौं ?'' फैसल नें अपराधी के ध्यान खींचतें पूछलकै । मजकि ऊ खामोशे रहलै ।

''हम्में पूछै छियौं कि तोरों नाम की छेकौं ?'' फैसल नें ओकरों चूल मुट्ठी में जकड़तें होलें पुछलकै, ''कुछुओ छुपैला सें फायदा नै होय वाला छौं। अधिकांश लोग तोरा पहचानी रहलों छै । कि तोहें चिड़िया घर रों कर्मचारी छेकौ । फेनू अपराधी सें सच कबूलवैवों हम्में अच्छा नाँखी जानै छियै ।''

''बतावै छियौं ।'' ऊ करैहतें होलें बोललै ।

''जल्दी बताव ।'' इन्सपेक्टरें ओकरों पीठ पर एक लात जमैतें बोललै ।

''इम्तयाज ।''

''हूँ, तें चिड़ियाखाना में कबें सें काम करी रहलों छैं ?''

''अढ़ाय साल सें ।''

''तोहें एत्तें एत्तें आदमी के खून कैन्हें करलैं ?''

अपराधी कुछ देर लेली सोचतें रहलै, फेनू बोललै, ''तोहें हमरोॅ दायां बाँह देखोॅ ।'' ई कही वैं आपनोॅ दायां हाथ झुलैलकै ।

''हों, ई हम्में जानलियै कि तोरोॅ दायां हाथ कटलोॅ छै, फेनू ?''

''ई हाथ केॅ काटै वाला अफजल छेलै ।''

''की मतलब ?'' फैसल नें चौकी केॅ पूछलकै ।

''अफजल आरो हम्में, दोनों अच्छा क्रिकेट खिलाड़ी छेलियै । अफजल कै सालोॅ सें लगातार कैप्टन बनतें आवी रहलोॅ छेलै । तीन साल पहिलें एक राजकीय मैच में हमरा कैप्टन बनाय के बात चली रहलोॅ छेलै । आरो हमरा पूरा विश्वास छेलै कि हम्मी कैप्टन चुनलोॅ जैवै कि एक दिन प्रैक्टिस के दौरान अफजलें क्रिकेट के बल्ला सें हमरोॅ बाँही पर हेनोॅ चोट करलकै कि बाँही रोॅ हड्डी चूर-चूर होय गेलै । तखनी अफजल के पक्षे में इनायत अली आरो युसुफ खाड़ोॅ रहलै । हमरोॅ बाँह ई कदर जख्मी होलै कि टुटलोॅ हिस्सा में जहर फैली गेलै, जेकरे कारण हमरा आपनोॅ हाथ बाँही तक कटवाय लेॅ लागलै । आरो यै किसिम सें हम्में हमेशा लेली बेकार होय गेलियै । जोॅन दिन अफजल, इनायत अली आरो युसुफ नें घेरी केॅ हमरोॅ बाँही जख्मी करलोॅ छेलै, ऊ दिन राशिदो वहीं मौजूद छेलै । हमरोॅ ऊ हाल पर वैं खड़ा-खड़ा ताली बजैलेॅ छेलै आरो आबेॅ वहू क्रिकेट रोॅ खिलाड़ी बनलोॅ जाय रहलोॅ छेलै । ई तेॅ संयोगे छेलै कि हमरा चिड़ियाघर में नौकरी मिली गेलै । वहाँ गिद्ध रोॅ एक प्रजाति कण्डूर सें हम्में घुली-मिली गेलियै । ऊ बेहद समझदार चिड़िया बुझैलै । तबेॅ हम्में ओकरा ट्रेनिंग देना शुरू करलियै । फेनू आपनोॅ दुश्मन सिनी केॅ मारै में ओकरे मदद लेलियै । हम्में ओकरोॅ पंजा में जहर लगाय दै छेलियै आरो जोॅन आदमी के तरफ इशारा करियै, ऊ ओकरा पर झपटी पड़ै ।

''मतरकि ड्रायवरें की कसूर करलेॅ छेलै ?''

''ओकरोॅ टैक्सी पर चूँकि राशिद बैठलोॅ छेलै आरो गिद्ध के निशानाहौ वही छेलै । बस ई समझोॅ कि टैक्सी ड्रायवर धोखाहै सें ओकरोॅ शिकार होय गेलै ।

''जे भी हुएँ । तोहें कानून केॅ आपनोॅ हाथोॅ में लै केॅ गलती करलेॅ छौ । आबेॅ सजाहौ लेॅ तैयार रहोॅ । तोरा माफी तेॅ केन्हौ केॅ नै मिलेॅ सकै

छें । एक सजा हम्मू तोरा देलें छी । तोरा गोली लागलों छौं । एत्तें देर तांय तोरों खूनो बहलों छौं । गोली के जहर फैली रहलों होतै । जब तांय ट्रिटमेण्ट शुरू होतै, डाक्टर तोरों पैर काटै के इन्तजार करतें रहतै ।

"नै, नै, ई इन्साफ नै छेकै । हमरा जल्दी अस्पताल लै चलों ।" इम्तयाज चीखी पड़लै ।

"इन्साफ के दरवाजा तोंही कबें खटखटैलों ? जहिया अफजलें तोरों बाँही घायल करलें छेलै, तहिये तोरा इन्साफ मांगना छेलौं । मतरकि तोहें खोमोशे रहलौ आरो दरिन्दा बनी कें सबके खून करतें रहलौ । इन्सानी जिन्दगी एत्तें सस्ता नै होय छै । तोरा तें मृत्यु दण्ड मिलनाहै छौं ।"

लोग एकदम्में गुम साधलें होलें छेलै । इन्सपेक्टर, ब्रेशा, दानिश आरो फराज अपराधी कें एक टक देखी रहलों छेलै । आरो आपनों तौर पर कुछु सोचियो रहलों छेलै ।

आरो हुन्नें फैसल के कानों में युसुफ केरी कनियैन साथें ओकरों बच्चा सिनी के कानवों के आवाज आवी रहलों छेलै ।

■■■